समाज विकास

मूल्य : ₹.१० प्रति, वार्षिक ₹.१००

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

● मार्च २०११ ● वर्ष ६१ ● अंक ३

राष्ट्रीय कार्यकारिणी की प्रथम बैठक में आह्वान

संगठन, सदस्यता एवं समाज सुधार

राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में दाएं से पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा व श्री मोहनलाल तुलस्यान, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, निवर्तमान अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री संजय हरलालका व श्री कैलाशपति तोदी।

● बिहार अधिवेशन : विजय किशोरपुरिया द्वारा अध्यक्ष भार ग्रहण

● बंगाल में हिन्दी भाषियों की राजनैतिक हैसियत – सीताराम शर्मा

● राजनैतिक चेतना : मारवाड़ी मतदाता बनें, मतदान करें

S R RUNGTA GROUP

Caring for Land and People...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Exporters & Sponge Iron Manufacturer

- ***IRON ORE*** *– BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *– BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *– LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA – 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/256761/256661; Fax: 91- 6582-256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

REGD. OFFICE:

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI, KOLKATA – 700 017, INDIA
Phone: 033 - 2281 6580, 22813751; Fax: 91-33- 2281 5380; E-mail: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION:

MAIN ROAD, BARBIL – 758 035, DIST. KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone : (06767) 275221, Telefax : 91- 6767- 276161

SPONGE IRON DIVISION:

ORISSA
MAIN ROAD, BARBIL – 758 035
DIST. KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone : (06767) 276891
Telefax : 91- 6767- 276891

JHARKHAND
RUNGTA OFFICE, SADAR BAZAR,
CHAIBASA-833201
DIST. SINGHBHUM(W), JHARKHAND, INDIA
Phone : (06767) 276891/256321 Fax : 91-6582-257521

समाज विकास

◆मार्च 2011 ◆वर्ष 61 ◆अंक-3 ◆एक प्रति-10 रु. ◆वार्षिक-100 रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	*पृष्ठ संख्या*
चिट्ठी आई है	४
सम्पादकीय : मारवाड़ी मतदान करें - ***सीताराम शर्मा***	५
समाज के नाम राष्ट्रीय अध्यक्ष का संदेश - ***हरिप्रसाद कानोड़िया***	७
राजनीति में सक्रिय हो समाज - ***रामअवतार पोद्दार***	८
होली सा सामाजिक महत्व - ***संतोष सराफ***	९
नव गठित राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की प्रथम बैठक की रपट	११-१२
बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का 27वाँ प्रादेशिक अधिवेशन सम्पन्न	
सभापति विजय कुमार किशोरपुरिया का अध्यक्षीय अभिभाषण	१३-१४
निर्वतमान अध्यक्ष कमल कुमार नोपानी का संदेश	१५
सम्मेलन ने किया मामराज अग्रवाल व जुगल किशोर सराफ का सम्मान	१६
बंगाल में हिंदी भाषियों की राजनैतिक हैसियत - ***सीताराम शर्मा***	१७-१९
पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का होली मिलन समारोह	२०
राष्ट्र सेवा में लीन है मारवाड़ी सम्मेलन : ***शोभा बजाज***	२१
भानीराम सुरेका की पुस्तक का लोकार्पण किया बिरला दम्पत्ति ने	२१
कलकत्ता अग्रवाल समिति ने कराया सामूहिक विवाह	२१
जिंदगी जिंदादिली का नाम है - ***मनमोहन बागड़ी***	२२
लेख : जीवन संध्या की कटु सच्चाई शासन नहीं समझौता- ***ओम लडिया***	२३-२४
सम्मेलन के नये संरक्षक, आजीवन व विशिष्ट सदस्यों की सूची	२५-२६
कविता : पेड़ - ***कुमार अनिल शर्मा***	२६
बंगाल की राजनीति में हाशिए पर हिन्दी भाषी - ***संजय हरलालका***	२७
राजस्थानी कविता : मारवाड़ी पत्नी रो फौजी पति स्यूं निवेदन - ***जगदीश प्रसाद पाटोदिया***	२७
दो लाइनों में क्या कुछ कह डाला	२८
परिचय : समाजरत्न श्री बसंतलाल मुरारका (अंतिम किस्त)	२९-३०
समस्त सृष्टि का नववर्ष-चैत्र शुक्ल प्रतिपदा - ***निर्मल कुमार जालान***	३१
दो दिवसीय राजस्थानी बाल साहित्य सम्मेलन सम्पन्न	३२
पं. ताऊ शेखावाटी रचित श्री श्याम चरित को सेठ मानमल कंदोई साहित्य सम्मान	३२
वैवाहिक आचार संहिता	३२
राजस्थानी नै बचाओ - ***मनोहरलाल गोयल***	३३
कविता : मिलकर नया समाज बनाये - ***युगल किशोर चौधरी***	३४
गजल : बेरंग-सा लगने लगा अब आस्माँ यारों - ***डॉ. दीप बिलासपुरी***	३४

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ 152बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - 700007

फोन : 033-2268 0319 ◆ email-samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा

ऐभल प्रिंटर्स.लि., 45बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता - 700009 से मुद्रित

प्रेरक संपादक : नंदकिशोर जालान ◆ संपादक : सीताराम शर्मा

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

जनवरी 2011 का **समाज विकास** प्राप्त हुआ। पूरी पत्रिका में लिखे सभी अनुबंध प्रेरणादायक एवं अनुकरणीय है। मैं इस अंक में प्रकाशित कुछ लेखों पर समाज के सभी तबके के लोगों का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करना चाहूंगा। श्रीमती शारदा तुलस्यान (खगड़िया निवासी) द्वारा लिखा गया लेख ***समाज सुधार के कुछ*** आयाम अपने आपमें एक बहुत ही विचारणीय लेख है। ध्यान से पढ़ने पर हम सभी पायेंगे कि आज समाज का अध:पतन क्यों हो रहा है। धनाढ्य एवं संपन्न परिवार के द्वारा चलायी गयी यह प्रथा कि शादी-विवाह में अपने सामर्थ्य से अधिक खर्च करके समाज को इस बात को दिखाना कि हम इन आयोजनों में भिन्न-भिन्न प्रकार के फिजूल खर्च कर अपने नामों का रौशन कैसे करें ? सम्पन्न परिवार के अभिभावकों को इस बात की फुर्सत नहीं है कि हमारे परिवार के बच्चे ऐसे क्लबों एवं सोसाइटी को एटेंड करते हैं जहां लड़के-लड़कियों का नंगा नाच प्रतिदिन होता है। बिना हिचक शराब का सेवन करना अपने आप में एक शौक बन जाता है। विवाह के पूर्व ही उनके यौन संबंध बन जाते हैं। सामाजिक बंधनों से अपने आपको बिल्कुल अलग कर लेते हैं। नतीजतन मध्यम परिवार के बच्चे भी अपनी औकात एवं सामर्थ्य को भूलकर उनके संपर्क में आकर अपने चरित्र को बुरी तरह खो देते हैं। मारवाड़ियों के चरित्र की एक अनुकरणीय बात है, उनकी सादगी और धार्मिक चेतना। **समाज विकास** के माध्यम से ही यह संभव हो पायेगा कि देश भर के लोगों को जो अपने समाज से जुड़े हैं समय-समय पर उन्हें इन सारे मार्ग दर्शक बातों से अवगत कराना और अपने आपमें सुधारने का प्रयास करना। संभवत: आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि हमारे समाज के सभी तबके के लोग अपने आप में निश्चित रूप में परिवर्तन लायेंगे एवं अपने चरित्र निर्माण से समाज एवं राष्ट्र का कल्याण करने का भरपूर प्रयास करेंगे।

शंकरलाल जालान द्वारा लिखा गया लेख **महंगे हो गये भगवान** अपने आप में समाज को उन बातों को याद दिला रहा है कि हमारे पूर्वज जिस निष्ठा और प्रेम से भक्ति को अपनाते थे उन्हें अपनाकर दूर देशों से आकर ऐसे स्थानों पर अपनी कर्मठता, कठिन परिश्रम, मितव्ययी, मिलनसारिता एवं आपसी संगठन से अपने व्यापार को इतना अधिक बढ़ाये कि आज देश में नहीं सम्पूर्ण विश्व में अपने समाज की प्रतिष्ठा एवं व्यापार की उन्नति चरम सीमा पर है।

कबीरदास की उन पंक्तियों पर समाज को निश्चित रूप में ध्यान देना चाहिये।

पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पुजूं पहाड़।
याते वा चाँकि भली जो पीस खाय संसार।

-सत्यनारायण तुलस्यान
मुजफ्फरपुर (बिहार)

'समाज विकास' का फरवरी 2001 का अंक मिला, हार्दिक प्रसन्नता हुई। माननीय श्री सीताराम शर्मा एवं नव निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री हरि प्रसाद कानोड़िया के विचारों ने काफी प्रभावित किया। समाज के सर्वांगीण विकास के लिए राजनैतिक चेतना और सुदृढ़ संगठन की महती आवश्यकता है जिस पर पूरी निष्ठा के साथ ध्यान देना हमारा पावन कर्तव्य है। जब हम राजनैतिक और सांगठनिक दृष्टि से मजबूत होंगे तब हमारी आवाज हर जगह सम्मानजनक ढंग से सुनी जायेगी। माननीय संतोष सराफ का समाज के अंदर वैचारिक क्रांति करने का आह्वान अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है। 22वें राष्ट्रीय अधिवेशन में पारित सातों प्रस्ताव बहुत ही सुंदर, प्रासंगिक एवं सराहनीय हैं जिनको पूरी तरह लागू करने के लिए भागीरथ प्रयास करना हम सबों का दायित्व है। विसंगतियों के बावजूद मारवाड़ी समाज का भविष्य निस्संदेह उज्वल है क्योंकि हम सदैव आत्मचिंतन करते रहते हैं।

सम्मेलन प्रगति करता रहे और 'समाज विकास' सामाजिक चेतना के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहे, यही चाह है।

-युगल किशोर चौधरी
चनपटिया, प. चम्पारन, बिहार

....

'समाज विकास' का जनवरी अंक पढ़कर बहुत चीजों की जानकारी मिली। धीरे-धीरे समाज विकास प्रगाति पथ पर अग्रसर हो रहा है और इसमें अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के बारे में काफी सामग्री आने लगी है। सम्मेलन के २२वें अधिवेशन में श्री सीताराम महर्षि को सीताराम रुँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार से नवाजा गया तथा यह भी जानकारी मिली कि यह पुरस्कार हर साल प्रदान किया जायेगा। मैं साहित्य में रूचि रखने वाला व्यक्ति हूँ इसलिए मेरे जैसे व्यक्ति के लिये यह हर्षदायिनी सूचना है विशेषकर राजस्थानी भाषा साहित्य में। समाज विकास में गजानन वर्मा के उपर भी एक लेख छापा गया है। इसके लेखक राजू खेमका ने महान गीतकार गजानन वर्मा की प्रतिभा का सटीक वर्णन किया है। वास्तव में गजानन वर्मा ऐसे अनोखे कलाकार हैं जिनकी जितनी प्रशंसा की जाये, कम है।

-एन.के. धानुका
१९६बी, चित्तरंजन एवेन्यू, कोलकाता-७

....

सरस-बधाई

अ.भा.मा.स. के राष्ट्रीय, नव निर्वाचितध्यक्ष
हरि प्रसाद कानोड़िया, सरल, श्रेष्ठ अरु दक्ष
सरल, श्रेष्ठ अरु दक्ष, आपके कार्यकाल में
उन्नति करे समाज, सदा हर-एक हाल में
शुभ अवसर पर आज आपको सरस बधाई
भेज रहे हैं हम दोनों मिल 'ताऊ-ताई'।

-ताऊ श्री काका

सम्पादकीय

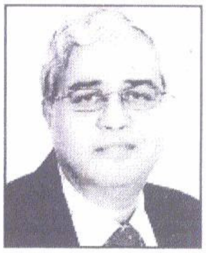

मारवाड़ी मतदान करें

हिन्दीभाषी बाहुल्य चुनाव क्षेत्रों में गिरता मतदान प्रतिशत

– सीताराम शर्मा

कतिपय राजनैतिक दलों द्वारा उम्मीदवारों की सूची जारी करने के साथ ही पश्चिम बंगाल विधान सभा चुनाव 2011 का बिगुल बज गया है। वाम मोर्चा, कांग्रेस एवं टीएमसी के उम्मीद्वारों की सूची में इक्का-दुक्का मारवाड़ी उम्मीद्वार हैं, हिन्दी भाषी उम्मीद्वारों की संख्या भी विधानसभा की २९४ की कुल सदस्यता में अधिकतम ५-७ ही है। भाजपा की सूची में यह संख्या कहीं अधिक है।

हिन्दीभाषियों के राजनैतिक प्रतिनिधित्व का प्रश्न जितना महत्वपूर्ण है उतना ही आवश्यक है हिन्दीभाषियों में राजनैतिक चेतना, राजनैतिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी एवं सर्वोपरि मतदान में हिस्सा लेना। मतदाता बनें, मतदान करें तथा गणतंत्र को मजबूत करें। मतदाताओं को पहली बार यह अधिकार मिला है कि अगर कोई भी उम्मीद्वार उनकी आशाओं के अनुरूप नहीं है तो वे कोई उपयुक्त नहीं के आधार पर भी वोट दे सकते हैं। हिन्दीभाषी आत्म चिन्तन करें, उनके प्रतिनिधित्व का प्रश्न तभी पूर्ण रूप से जायज ठहराया जायेगा जब वे चुनाव प्रक्रिया में सक्रियता से भागीदारी निभायेंगे, मतदान करेंगे। आपका वोट ही आपके प्रतिनिधित्व का परिचय देगा।

गिरता मतदान प्रतिशत : गत चुनावों में हिन्दीभाषी बाहुल्य विधान सभा क्षेत्रों में मतदान का रिकार्ड बहुत अच्छा नहीं रहा है। वास्तव में यह निराशाजनक रहा है। १९५२ के प्रथम विधान सभा चुनाव के बाद से मतदान में लगातार वृद्धि हुई है। प्रथम चुनाव में मतदान का प्रतिशत था ५९.६० जबकि यह बढ़कर २००६ के गत चुनाव में ८१.९५ प्रतिशत तक पहुंच गया।

२००६ के विधान सभा चुनाव के ८१.९५ प्रतिशत के औसत मतदान की तुलना में हिन्दीभाषी बाहुल्य विधान सभा क्षेत्रों में मतदान बहुत ही कम रहा। वास्तव में सबसे कम मतदान ४२.१२ प्रतिशत बड़ाबाजार विधान सभा चुनाव क्षेत्र में हुआ जो बंगाल के औसत से प्राय: आधा था। कुल ६५,८९२ मतदाताओं में से केवल २७,७६३ वोटरों ने मतदान किया। ऐसी ही मिलती-जुलती स्थिति अन्य कई हिन्दीभाषी बाहुल्य विधान सभा क्षेत्रों में २००६ के चुनाव में रही - जोड़ाबागान (५५.१९ प्रतिशत), जोड़ासांकू (५०.९१ प्रतिशत), बऊबाजार (५४.४१ प्रतिशत), चौरंगी (५०.९७ प्रतिशत), कवितीर्थ (५३.२९ प्रतिशात), काशीपुर (६८.१७ प्रतिशत), अलीपुर (६०.२३ प्रतिशत), बालीगंज (६५.३५ प्रतिशत), हावड़ा उत्तर (६६.२७ प्रतिशत), आसनसोल (६३.३९ प्रतिशत), हावड़ा दक्षिण (६४.१९ प्रतिशत) गार्डेनरीच (६०.७० प्रतिशत)।

पश्चिम बंगाल के अधिकतर विधान सभा क्षेत्रों में मतदान का प्रतिशत ७५ से ८० के बीच में था, जबकि उपरोक्त क्षेत्रों में प्राय: ४५ से ६५ प्रतिशत रहा। एक दर्जन से अधिक विधान सभा क्षेत्रों में ९० प्रतिशत से अधिक मतदान रहा।

राज्य में मारवाड़ियों सहित हिन्दीभाषियों की जनसंख्या में इजाफा हुआ है। व्यवसाय, उद्योग, समाज सेवा समेत अन्य क्षेत्रों में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है। हिन्दी भाषी निर्वाचित विधायकों की संख्या में लगातार कमी आयी है। पिछले दशकों में बंगाल में कोई हिन्दी भाषी मंत्री नहीं रहा है। कई विधान सभा क्षेत्र में हिन्दी भाषी निर्णायक भूमिका निभाते हैं लेकिन अभी तक उन्हें राजनैतिक क्षेत्र में वह स्थान नहीं मिल पाया है, जिसके वे हकदार हैं। सभी राजनैतिक दल उन्हें वोट बैंक के रूप में उपयोग करते हैं। लेकिन इसके लिए सिर्फ राजनैतिक दल ही जिम्मेदार नहीं हैं बल्कि मारवाड़ी सहित सभी हिन्दी भाषी भी जिम्मेदार हैं। राजनीति में सक्रियता बढ़ाने की आवश्यकता है। अपने अधिकारों एवं जिम्मेदारियों के प्रति उन्हें अधिक सजग एवं सक्रिय होना पड़ेगा। आत्म-चिन्तन की आवश्यकता है लेकिन इससे राजनैतिक दलों की भूमिका कम नहीं हो जाती। राजनैतिक दलों को मारवाड़ी/हिन्दी भाषी बाहुल्य क्षेत्रों में हिन्दी उम्मीद्वार को प्राथमिकता देनी चाहिए।

राज्य में मारवाड़ियों सहित हिन्दीभाषियों की जनसंख्या में इजाफा हुआ है। व्यवसाय, उद्योग, समाज सेवा समेत अन्य क्षेत्रों में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है। हिन्दी भाषी निर्वाचित विधायकों की संख्या में लगातार कमी आयी है। पिछले दशकों में बंगाल में कोई हिन्दी भाषी मंत्री नहीं रहा है। कई विधान सभा क्षेत्र में हिन्दी भाषी निर्णायक भूमिका निभाते हैं लेकिन अभी तक उन्हें राजनैतिक क्षेत्र में वह स्थान नहीं मिल पाया है, जिसके वे हकदार हैं। सभी राजनैतिक दल उन्हें वोट बैंक के रूप में उपयोग करते हैं।

भूल सुधार

समाज विकास के फरवरी 2011 के अंक में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पटना में आयोजित 22वें राष्ट्रीय अधिवेशन की सचित्र रपट में बिहार के पर्यटन मंत्री श्री सुनील कुमार पिन्टू की जगह बिहार के खाद्य व नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री श्याम रजक तथा श्री रजक के स्थान पर श्री पिन्टू का नाम प्रकाशित हो गया था। इसके अलावा म.प्र. प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री कमलेश नाहटा का नाम अध्यक्ष के तौर पर प्रकाशित हुआ था। इन भूलों के लिये हमें खेद है। -**सम्पादक**

With Best Compliments From :-

M/s ROAD CARGO MOVERS (P) LTD.

1, GIBSON LANE, 2ND FLOOR, SUIT NO :- 211
KOLKATA -700 069

Tele No. : 2210-3480, 2210-3485
Fax No. : 2231-9221
e-mail : roadcargo@vsnl.net

BRANCHES & ASSOCIATES AT

DURGAPUR, HALDIA, CHENNAI, HYDERABAD, BANGALORE, ICHAPURAM, BHIVANDI, COCHI, MUMBAI, VIJAYWADA, COIMBATORE, GAZIABAD, PONDICHERRY, VISAKHAPATNAM

समाज के नाम राष्ट्रीय अध्यक्ष का संदेश

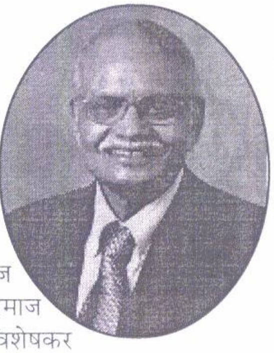

गत 30 जनवरी 2011 को बिहार की राजधानी पटना में आयोजित अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के 22वें राष्ट्रीय अधिवेशन में पदभार ग्रहण करने के पश्चात् समाज विकास के माध्यम से यह मेरा पहला संदेश आपके नाम है। आपकी प्रतिक्रियाएं व सुझाव मुझे न सिर्फ प्रोत्साहित व प्रेरित करेंगे बल्कि सम्मेलन को और आगे ले जाने में सहायक होंगे।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में आयोजित २२वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सभी मायनों में सफल रहा। इसके लिए बिहार प्रांत के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं को मैं साधुवाद देता हूँ। इस अधिवेशन में एक ओर जहाँ कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किये वहीं कई निर्णय भी लिये गये। अब हमें पारित प्रस्तावों एवं लिये गये निर्णयों पर कार्य करना है। हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता संगठन को और मजबूती प्रदान करने पर रहेगी, इसके अलावा समाज के विभिन्न तबकों में सामाजिक चेतना जागृत करने हमारा मुख्य उद्देश्य होगा।

एकल सदस्यता : देश के १३ राज्यों में सम्मेलन अपनी प्रान्तीय इकाइयों के माध्यम से कार्य कर रहा है। सबका अपना-अपना संविधान व विधान है और उसके अन्तर्गत वे कार्य कर रहे हैं। इससे सम्मेलन के कार्यों में एकरूपता का अभाव दृष्टिगोचर हो रहा है। मारवाड़ी समाज पूरे देश में बसता है किन्तु अभी तक हम अपनी पहुँच सभी तक नहीं बना पाये हैं। कई राज्यों में हमारी शाखा ही नहीं है। जब तक हम एक होकर कार्य नहीं करेंगे और अपनी संगठन शक्ति को नहीं बढ़ायेंगे, तब तक हमारी आवाज को वह बल नहीं मिलेगा जिसकी आज जरूरत है। आज आवश्कता इस बात है कि पूरे देश में हमारी प्रांतीय इकाइयां हों, एकल सदस्यता हो और पूरा मारवाड़ी समाज संगठित नजर आये। एकल सदस्यता को लेकर विगत में भी कई बार विचार-विमर्श हुआ किन्तु वह अमली जामा नहीं पहन सका। किन्तु अब इसे कार्य रुप में परिणत करना होगा। इसके लिए दो-तीन माह के भीतर सभी प्रान्तीय पदाधिकारियों की बैठक बुलाकर एक निर्णय पर पहुँचने की जरूरत है ताकि आगामी दिनों के कार्यक्रमों को मूर्त रूप प्रदान किया जा सके।

अपना कार्यालय : स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि भारत गांव में जीता है। इसी तरह सम्मेलन भी प्रांतों, जिलों, नगरों और गांवों में बसता है। प्रत्येक जगह सम्मेलन का सुविधाओं से पूर्ण कार्यालय होना चाहिए जिससे हमारे समाज की ताकत बढ़ेगी।

सदस्यता अभियान : किसी भी संगठन का मूल आधार उसकी सदस्य संख्या होती है। हमें सदस्यता बढ़ाओ अभियान पर जोर देना है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह सम्मेलन का सदस्य बने और बनाये। देश के प्रत्येक गांव में, जहां मारवाड़ी बसता है वहां हमारे सदस्य होने चाहिए।

उच्च शिक्षा कोष : आप सभी की प्रेरणा से निवर्तमान अध्यक्ष श्री नन्दलालजी रुँगटा के कार्यकाल में इसकी स्थापना की गई। जिसमें करीब डेढ़ करोड़ रुपये एकत्र हो गये हैं। इस राशि से प्राप्त ब्याज की रकम से उच्च शिक्षा हेतु समाज के मेधावी छात्र-छात्राओं विशेषकर तकनीकी शिक्षा के लिये सहायता प्रदान की जायेगी। उच्च शिक्षा कमेटी के अध्यक्ष श्री प्रह्लादरायजी अग्रवाल हैं। इस कोष में समाज के लोगों को सहयोग करना चाहिए।

राजनैतिक चेतना : आज हमारा समाज सभी क्षेत्रों में अग्रसर है। उच्च शिक्षा, उच्च तकनीकी शिक्षा, व्यापार, मेडिकल, इंजीनियरिंग, आर्थिक, कानूनी सभी क्षेत्रों में हमारे समाज के लोगों ने सफलता के झंडे गाड़े हैं। किन्तु दुर्भाग्य है कि गत 30 सालों में राजनीति के क्षेत्र में हम पिछड़ गये। देश की आजादी में हमारे समाज के लोगों ने विभिन्न तरीके से अपनी आहुति दी। कभी भामाशाह बनकर तो कभी महाराणा प्रताप की तरह जंगलों में रहकर घास की रोटी खाकर। अब एक बार फिर जरूरत इस बात की है कि राजनीति में हमारा समाज सक्रिय हो। सरकार तक हमारी बात पहुँचे, इसके लिए यह अत्यन्त जरूरी है। हमें साथ ही यह बात भी ध्यान रखनी चाहिए कि ***हमारा लक्ष्य राष्ट्र की प्रगति*** है।

आडम्बर व दिखावा से बचें : भारत की आबादी तेजी से बढ़ रही है वहीं दूसरी ओर खाद्य पदार्थों का उत्पादन घट रहा है। परिणान स्वरूप महंगाई बढ़ रही है। सरकारें अपनी राजनैतिक मजबूरियों से बंधी होती हैं। ऐसे में हमारा दायित्व बढ़ जाता है। हमें अनुचित लाभ लेने की मानसिकता से बचना चाहिए। हमें खाद्य पदार्थों की बरबादी रोकने हेतु कदम उठाना चाहिए। वैवाहिक और अन्य सामाजिक व धार्मिक समारोहों में आडम्बर व दिखावे में धन की बर्बादी करना 'लक्ष्मी मैया' का अपमान करना है। आप उसका अपमान करेंगे तो वह आपसे दूर चली जायेगी। अपने धन का प्रयोग सद् कार्यों में करें। यह यात्रा कठिन है लेकिन असंभव नहीं। गांधीजी अकेले चले, फिर संसार उनके साथ हुआ। नेताजी, स्वामी विवेकानन्द, झांसी की रानी सभी अकेले थे। आप राजस्थान की उस वीर भूमि के हैं जहां के महाराणा प्रताप ने राज-पाट का त्याग कर जंगलों की खाक छानी, घास की रोटी खाई किन्तु अपने पथ से नहीं डिगे।

इस सम्बन्ध में आपके सुझाव, प्रेरणा एवं सहयोग ही मेरा सम्बल होगा और मुझे कार्य करने की क्षमता प्रदान करेगा।

हरिप्रसाद कानोड़िया

राजनीति में सक्रिय हो समाज

-राम अवतार पोद्दार
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

आप सब को होली की शुभ कामनायें। होली खूब आनंद मंगल से मनाई होगी। हमारे शास्त्रों के अनुसार, होली पर सब प्रकार के वैमनस्य एवं भेदभावों को भूला कर एक दूसरे को गुलाल एवं रंग लगाकर मंगल कामनायें दी जाती है। मैं समझता हूं कि आप सभी का अगर किसी प्रकार का कोई भी प्रकार का मनमुटाव रहा होगा तो जरूर उसको भुला कर खूब रंग खेला होगा तथा एक दूसरे को बधाई दी होगी।

होली का रंग तो अब धीरे-धीरे उतर रहा होगा परन्तु अब एक नया रंग चढ़ रहा होगा क्योंकि देश के कुछ राज्यों सहित पश्चिम बंगाल में भी अप्रैल एवं मई में विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं। होली के बाद अब सर्वत्र चुनाव की ही चर्चा है। सबसे बड़ी चर्चा है कि बंगाल में हिन्दी भाषियों को राजनैतिक पार्टियां क्यों महत्व नहीं देती हैं जबकि पश्चिम बंगाल में उनकी जनसंख्या सत्तर लाख से ज्यादा है। कई एक क्षेत्र में उनका प्रभुत्व प्रार्थी को जिताने में मुख्य रूप से रहता है।

पहले हमारे अपने ५-७ प्रतिनिधि विधानसभा में जाते थे जो कि अब मुश्किल से एक पर आ गया है। क्या इसका दोष सिर्फ राजनैतिक पार्टियों को देकर अपना पलड़ा झाड़ लेने से होगा? मैं समझता हूं कि इसके लिए हम ज्यादा जिम्मेदार हैं। क्या हम वोटर बनते हैं? अगर वोटर बन भी जाते हैं तो क्या हम वोट देने जाते हैं? वोट देते समय क्या हम अपने प्रतिनिधि के बारे में सोचते हैं? क्या हम हमारे अपने किसी सदस्य को, जो कि राजनीति करता है उसे प्रोत्साहित करते हैं? जरा सोचिये यदि हमारा समाज का कोई व्यक्ति राजनीति के मैदान में उतरता है तो क्या हम उसे प्रोत्साहित करते हैं न कि उसको पछाड़ने में लग जाते हैं। अगर हममें एकता होगी तो राजनैतिक पार्टियों को भी हमें महत्व देना होगा। जनतंत्र के युग में संगठन का बहुत बड़ा महत्व है। हमें संगठित होना होगा। अपने कारोबार के लिए लड़ना होगा। तभी हमें हमारा हक मिलेगा नहीं तो राजनीति में हम कहीं के नहीं रहेंगे। अब हमें वह पुरानी नीति छोड़नी होगी कि कोई भी दल हो हमें क्या लेना-देना, जो सत्ता में आयेंगे हम उसे सलाम करेंगे।

आपके सम्मेलन ने कई गोष्ठियों के माध्यम से इस पर विचार किया तथा समाज विकास के माध्यम से आपको सक्रिय राजनीति में भाग लेने का आह्वान भी किया है। जागिये और अपने अधिकार को समझिये। अपना प्रतिनिधि भेजते समय आंख, कान खोलकर रखिये। किसी के बहकावे में न आयें, यही मेरी आपसे अपील है।

अगर हममें एकता होगी तो राजनैतिक पार्टियों को भी हमें महत्व देना होगा। जनतंत्र के युग में संगठन का बहुत बड़ा महत्व है। हमें संगठित होना होगा। अपने कारोबार के लिए लड़ना होगा। तभी हमें हमारा हक मिलेगा नहीं तो राजनीति में हम कहीं के नहीं रहेंगे। अब हमें वह पुरानी नीति छोड़नी होगी कि कोई भी दल हो हमें क्या लेना-देना, जो सत्ता में आयेंगे हम उसे सलाम करेंगे।

....

होली का सामाजिक महत्व

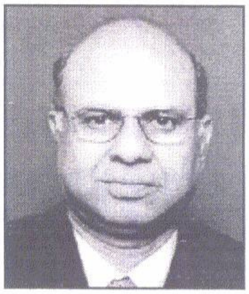

-संतोष सराफ, राष्ट्रीय महामंत्री

मारवाड़ी समाज ने बेशक हर क्षेत्र में तरक्की की है। उद्योग-व्यापार और आर्थिक दृष्टि से समाज में सफलता के झंडे लहरा रहे हैं, लेकिन सामाजिक दृष्टि से मूल्यों का ह्रास हुआ है, बुराइयों ने जकड़ लिया है। ...तो आइए होली के पर्व पर बुराइयों और विसंगतियों से निजात पाने का संकल्प लें।

बुराई पर अच्छाई, अधर्म पर धर्म और नास्तिकता पर आस्तिकता की विजय का प्रतीक है होली का त्योहार। सामाजिक समरसता और आनंद -उल्लास का अथाह समुद्र लिए यह त्योहार फाल्गुन पूर्णिमा को प्रतिवर्ष आता है। हिरण्यकश्यप और उसके पुत्र प्रह्लाद का नाम सहज ही मानस पट पर इस त्योहार के नाम के साथ अंकित हो जाता है। नास्तिकता, अधर्म और बुराई का प्रतीक हिरण्यकश्यप भगवद्भक्त, धर्मपरायण और अच्छाई के प्रतीक प्रह्लाद को मृत्युदंड देने में जब असफल हुआ तो उसने अपनी भगिनी होलिका को इस कार्य में नियुक्त किया लेकिन होलिका जब गोद में लेकर प्रह्लाद को अग्नि में प्रविष्ट हुई तो अग्नि प्रह्लाद के लिए जहां शीतल हुई वहीं होलिका वरदान के बावजूद अग्नि में जल गई। आखिर बुराई का साथ देना महंगा साबित हुआ। तभी से होली जलाने और अच्छाई की जीत का समारोह या जश्न मनाना शुरू हुआ। यह आनंदोत्सव रंगोत्सव में परिणत हुआ क्योंकि रंग-भेद (वर्ण-भेद) सामाजिक एकता को विखंडित करती है। इसलिए रंगों के मिश्रण से रंग भेद के भेदभाव को मिटाकर एकता का संदेश इस आनंदोत्सव ने दिया।

गत कुछ वर्षों में देखा गया कि कुछ लोग इस त्योहार के अवसर पर मादक द्रव्यों का सेवक कर बेसुध हो सामाजिक अच्छाई एवं भाईचारे के प्रतीक इस त्योहार को गलत मायने में समझ बुरी राह पर नजर आते हैं। कुछ ने इस रंगोत्सव बनाम आनंदोत्सव को मदनोत्सव बनाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। इस पावन त्योहार का बेजा फायदा उठा अश्लील आचरण से बाज नहीं आते जो कि वस्तुत: होली का संदेश नहीं है।

होली में सामाजिकता का संदेश है। संदेश है रंगोत्सव के माध्यम से रंग भेद को दूर करने का, संदेश है राक्षसी प्रवृत्तियों पर दैवी प्रवृत्तियों की प्रभुता का, संदेश है धर्म व अच्छाई की विजय को प्रश्रय देने का और श्रेय है भाईचारे के भाव को परस्पर बढ़ाने का।

आज भारत में विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनैतिक वातावरण में विद्रूपता जन्म ले चुकी है। अशुभ शक्तियां तन व मन पर अपना प्रभुत्व कायम करने में पिल पड़ी हैं। शुभ शक्तियां कोने में अपना अस्तित्व संभालती नजर आ रही हैं। आज समाज कुरीति व अपराध की शरणस्थली ही नहीं वरन् क्रीड़ास्थली बन गया है। समाज में छुआछूत, दहेज का दानव, एकल परिवार, मद, मोह, मात्सर्य, सट्टा, कालाबाजारी, कालाधन, मानसिक व चारित्रिक पतन, अश्लीलता, आरक्षण, वर्ग वैषम्य और हिंसा ही जीवन का अभिन्न अंग बन गई है। ऐसे में होली को हमें नवीन अर्थों में देखने की जरूरत है। जरूरत है समाज की समस्त बुराईयों को दूर करने की। लेकिन खेद यह है कि होली आते ही अपराध के आंकड़ों में वृद्धि होने लगती है। यह हमें निश्चित करना होगा कि हम कैसा समाज चाहते हैं। तो आइए हम आज होली के अवसर पर एक शुभ संकल्प लें, शिव संकल्प लें कि समाज को हम एक नया संदेश दें-सामाजिक समता का जिसमें सभी को अपना जीवन जीने की आजादी हो लेकिन बुराइयों का नामोनिशान भी न हो। आतंक का साया न हो। देह व्यापार के जरिए धन लिप्सा न हो। दहेज के प्रेत का वास न हो। हमारा समाज अपराध व अपराधियों की क्रीड़ास्थली नहीं बल्कि श्मशानस्थली बने जिसमें कालाबाजारी और कालाधन एवं काली करतूतों की बाढ़ न हो बल्कि परिवर्तन की बाढ़ में इनका बहाव जरूर हो अर्थात् होली के त्योहार में हम शुरू करें संपूर्ण शुद्धिकरण। शुद्धिकरण हमारे अंत: व बाह्य विचारों का ही नहीं बल्कि आचरण का भी।

होली का पर्व सबके जीवन को अच्छाई के प्रकाश से आलोकित करे। सभी स्वस्थ, समृद्ध, सम्पन्न और सानंद रहें और सबको सामाजिक बुराईयों-विकृतियों से लड़ने की ताकत हासिल हो। होली के त्योहार पर सबको बधाई।

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

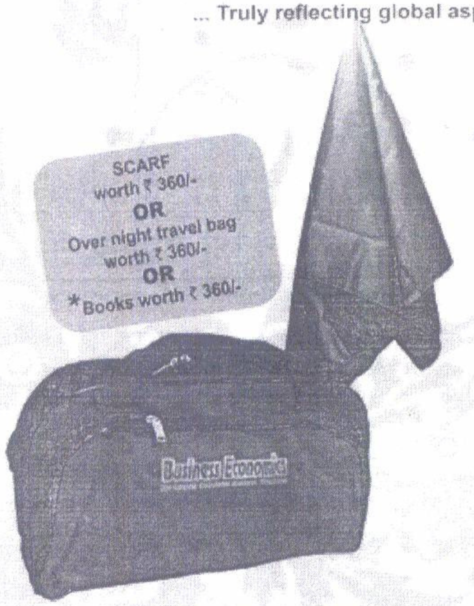

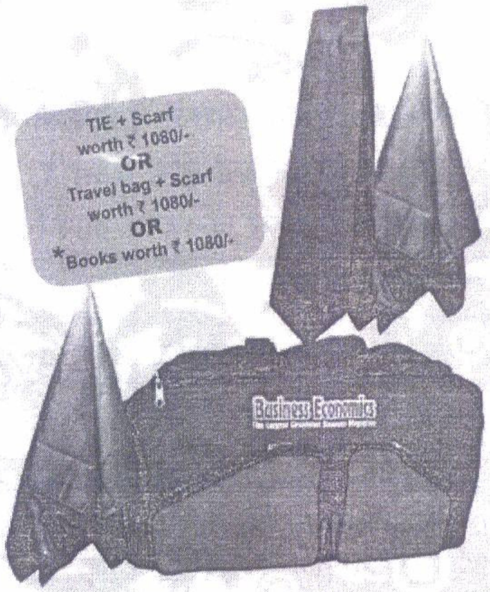

Business Economics Subscription Form

Yes! I would like to subscribe **Business Economics**

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1080/-	1080/-	1080/-	144	72	☐ Tie + Scarf OR ☐ Bag + Scarf ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)
☐	1 Year	24	360/-	360/-	360/-	48	24	☐ Scarf OR ☐ Bag OR ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 50)	120/-	NIL	290/-	-	-	☐ Exclusively for Students
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 50)	120/-	NIL	290/-	-	-	☐ EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS

Name Mr./Ms. ____________________

Address ____________________

____________________ City/District ____________________

State ____________ Country ____________ Pin Code ☐☐☐☐☐☐

E-mail : ____________ Mobile ____________ Landline : ____________ STD code

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No ____________ dated: ____________ for Rs. ____________ drawn on: ____________

In favour of CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED

*** For books see reverse page**

Signature ____________ date ____________

Mail this subscription form along with your Cheque / DD to : Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai** : Rajendra Singh : 90290 84951
New Delhi : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima** : Povotso Lohe : 94360 05889

नव गठित राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की प्रथम बैठक

समाज सुधार हेतु स्व चेतना जरूरी - कानोड़िया

राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में दाएं से पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा व श्री मोहनलाल तुलस्यान, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, निवर्तमान अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री संजय हरलालका व श्री कैलाशपति तोदी।

कोलकाता। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की नवगठित राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की प्रथम बैठक शनिवार, 26 मार्च 2011 को हिन्दुस्तान क्लब, कोलकाता में सम्मेलन सभापति श्री हरिप्रसाद कानोड़िया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में अध्यक्ष श्री कानोड़िया ने कहा कि संगठन को और मजबूती प्रदान करने की अत्यधिक आवश्यकता है। महिला सम्मेलन एवं युवा मंच के साथ मिलकर हम समाज सुधार के कार्यक्रमों को आगे बढ़ाना चाहते हैं। समाज में व्याप्त आडम्बर एवं दिखावा के सम्बन्ध में आपने कहा कि इस मामले में स्व चेतना का संचार होना जरूरी है।

इस मौके पर उपस्थित सदस्यों ने समाज की परम्परा को बचाये रखने, शैक्षणिक विंग बनाने, समाज के युवकों द्वारा व्यवसाय में रूचि न लेकर नौकरी की ओर पलायन करने, समाज के लोगों को सम्मेलन से जोड़ने हेतु उन्हें लाभ पहुँचाने, शादी के महंगे कार्डों पर रोक लगाने, समाज के लोगों में राजनैतिक चेतना का संचार करने जैसे कई मुद्दे उठाये। राजनीति में समाज के लोगों की रूचि जागृत न होने पर चिन्ता जाहिर करते हुए सदस्यों ने कहा कि राजनेताओं में हमारे बारे में गलत धारणा है। हमें यह कहने में शर्म महसूस होती है कि हम मारवाड़ी हैं। इन क्षेत्रों में भी हमें कार्य करना चाहिए। महिला सदस्यों ने कहा कि सम्मेलन महिलाओं को अपने से जोड़े और उन्हें दायित्व दें।

पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य समाज सुधार, समाज का सर्वांगीण विकास व समरसता है। सेवा हमारा मुख्य लक्ष्य नहीं है। आपने कहा कि जहाँ-जहाँ समाज के लोगों को तकलीफ हुई, वहाँ-वहाँ सम्मेलन मजबूत हुआ है। आपने कहा कि फिलहाल देश के 13 राज्यों में हमारी प्रादेशिक इकाइयां हैं। आगामी दिनों में तीन और प्रान्तों में शाखाएं खोलने की योजना है। आपने कहा कि सभी प्रान्तों को

बैठक में उपस्थित कार्यकारिणी के सदस्यगण।

लेकर एकल सदस्यता करने की जरूरत है। निवर्तमान अध्यक्ष श्री रुँगटाजी के कार्यकाल में इस दिशा में प्रयत्न शुरु किया गया। अब शीघ्र ही इसे आगे बढ़ाकर कार्यरूप देने की आवश्यकता है। उच्च शिक्षा के सम्बन्ध में आपने कहा कि हमारे प्रान्त शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। हम उच्च शिक्षा के क्षेत्र में समाज के होनहार बच्चों को सहायता उपलब्ध करवाना चाहते हैं। इसके लिए दो करोड़ रुपयों के फण्ड से इसकी शुरुआत करने की योजना है। इस हेतु अभी तक करीब 1 करोड़ 70 लाख रुपयों का लक्ष्य हमने पा लिया है। 31 मार्च 2011 तक इस राशि को दो करोड़ कर इसके लिए एक एक्सपर्ट कमेटी बनाकर इस दिशा में कार्य शुरु किया जायेगा। सम्मेलन से महिला सदस्यों को जोड़ने के सवाल पर आपने कहा कि सम्मेलन की महिला विंग अलग से कार्य कर रही है। हम महिलाओं की एक सब कमेटी बनाने पर विचार करेंगे जो कि महिला विंग के साथ मिलकर कार्य करे। आपने कहा कि महिलाओं एवं युवाओं के बिना समाज सुधार संभव नहीं है।

निवर्तमान अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा ने कहा कि सम्मेलन के सदस्यों की डायरेक्टरी प्रकाशित करने का कार्य अप्रैल माह तक हो, ऐसा प्रयास करना चाहिए।

बैठक में सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारक अखिल भारतीय समिति के सदस्यों का चुनाव आगामी मई-जून तक कराने का निर्णय लिया गया। इसके लिए चुनाव अधिकारी की नियुक्ति सहित सम्मेलन के दैनिक कार्यों के सम्पादन हेतु बनाई जाने वाली स्थायी समिति एवं अन्य सब कमेटियों के गठन का भार राष्ट्रीय अध्यक्ष को दिया गया।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ ने सम्मेलन द्वारा विगत दिनों किये गये कार्यों का ब्यौरा दिया। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने आय-व्यय का ब्यौरा रखते हुए आगामी वित्तीय वर्ष का संभावित बजट पेश किया। बैठक में पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री संजय हरलालका व श्री कैलाशपति तोदी, पूर्व महामंत्री श्री भानीराम सुरेका, श्री हरिप्रसाद बुधिया, श्री श्रवण कुमार तोदी, श्री नारायण प्रसाद माधोगढिया, श्री ईश्वरी प्रसाद टांटिया, श्री महेश सहरिया, श्री श्यामलाल डोकानिया, श्री श्याम सुन्दर बेरीवाल, श्रीमती उमा सराफ, श्रीमती रचना नाहटा, श्री ओम प्रकाश पोद्दार, श्री जुगलकिशोर जैथलिया, श्री द्वारका प्रसाद डाबड़ीवाल, श्री रामगोपाल बागला, श्री बी.के. माहेश्वरी, श्री रामनाथ झुनझुनवाला, श्री एन.के. अग्रवाल, श्री रविन्द्र लढ़िया सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का २७वां प्रादेशिक अधिवेशन गया शाखा के आतिथ्य में सम्पन्न

सभापति विजय कुमार किशोरपुरिया का अध्यक्षीय अभिभाषण

मगध की प्राणधारा फल्गु नदी के पावन तट पर बसे महान पौराणिक नगर गया में आप सभी का हार्दिक अभिनन्दन है। आज के अधिवेशन के उद्घाटनकर्ता माननीय श्री प्रेम कुमारजी (मंत्री बिहार सरकार), मुख्य अतिथि श्री संतोष सराफ (महामंत्री अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन), विशेष अतिथि श्री रतन शाह एवं बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के भूतपूर्व अध्यक्षगण, निवर्तमान अध्यक्ष श्री कमल नोपानी, अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष श्री शिव कैलाश डालमिया, गया शाखा के अध्यक्ष श्री मोहनलाल झुनझुनवाला अन्य पदाधिकारीगण एवं सदस्यगण एवं पूरे बिहार से आये हुए मारवाड़ी समाज के स्त्री-पुरुष शक्ति का मैं हृदय से स्वागत करता हूं।

मारवाड़ी समाज के लोग जिस-जिस प्रदेश में गए वहां उन्होंने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और उद्यमशीलता के बल पर काफी विकास कार्य किया और अनेकों स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, धर्मशाला, मंदिर और गौशालाओं का निर्माण किया। जहां तक बिहार की बात है हमारे पूर्वजों की जन्मभूमि राजस्थान, हरियाणा है और कर्मभूमि बिहार। हमलोगों में से 95 प्रतिशत से ज्यादा लोगों की जन्मभूमि बिहार है और प्राय: शत-प्रतिशत लोगों की कर्मभूमि बिहार है। अत: हम पहले बिहारी और तब मारवाड़ी हैं। बिहार में हमारे बसने के पिछले चार सौ वर्षों का इतिहास इस बात का गवाह है कि बिहार को हमने अपने खून-पसीने से सींचा है और निरंतर बढ़ते बिहार का सपना देखा है। आज हमारे समाज ने उद्योग एवं व्यापार के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि शिल्प, साहित्य, गीत, संगीत, चित्रकला, वकालत और विज्ञान के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है।

जिओ और जीने दो हमारे जीवन का मूलमंत्र है और वसुधैव कुटुम्बकम् का सिद्धांत हमारी जीवन पद्धति।

दुर्भाग्य से आज मारवाड़ी समाज अपनी पहचान खोता जा रहा है। यह एक चिंता का विषय है। हमें निदान के कारणों को खोजना होगा। हमें परम्परा का सार-तत्व ग्रहण कर उसे समय एवं स्थिति के अनुसार परिष्कृत करते हुए आगे बढ़ना होगा तभी हमारा समाज प्रगतिशील और व्यावहारिक होगा।

सामाजिक आडम्बर को समाप्त करना एक बड़ी चुनौती है। समाज के समर्थ लोगों को इसके लिए पहल करनी होगी। आडम्बर समाप्ति के लिए दिशा-निर्देश एवं विचार पूर्व अध्यक्ष द्वारा समाज को दिये गये हैं। समाज के प्रबुद्ध लोगों ने सम्मेलन के इस प्रयास की सराहना भी की है। यह आडम्बर पाश्चात्य सभ्यता की नकल है।

आज पश्चिम के लोग भारतीय संस्कृति एवं सादगी को अपना रहे हैं एवं आडम्बर से ऊब चुके हैं। आडम्बर की समाप्ति से समाज एकजुट होगा। अमीर-गरीब का भेद स्वत: कम हो जायेगा।

कभी-कभी हमारी शांतिप्रियता और सहनशीलता को लोग हमारी कमजोरी समझ लेते हैं। इसके लिए हमें अपनी स्वाभिमान की हर हालत में रक्षा करनी होगी।

दोस्तों, फूलों से मुस्कुराना सीख लो
राह कांटों पर बनना सीख लो।
जिंदगी का क्या भरोसा
मौत से आंखें लड़ना सीख लो।

आज हमारे सामने कई समस्याएं हैं। जीवन है, व्यक्ति है, समाज है तो समस्याएं तो होंगी ही। भरोसे की बात है कि हमारे पास एक अनुभवी संगठन है। संगठन है तो प्रेरणा है और यही प्रेरणा हमारी संजीवनी है, शक्ति है। याद रखें आप हम इसी के लिए बैठे हैं। मारवाड़ी सम्मेलन का प्रदेश अध्यक्ष होने के नाते मेरी कामना है कि मारवाड़ी सम्मेलन समाज के हर परिवार की नैया की पतवार बने। हम आप सुरक्षित महसूस करें और अपने मारवाड़ी समाज का संपूर्ण विकास हो।

बिहार का विकास समाज का विकास, समाज का विकास हमारा विकास

आज बिहार में नीतीश-मोदी सरकार ने प्रशासन में, कानून व्यवस्था में जो चमत्कारी परिवर्तन किया है उसे भारत ही नहीं पूरी दुनिया में सराहा जा रहा है। सरकार बिहार के विकास के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। हमारा दायित्व है कि इस विकास अभियान में हम अपने कर्तव्य पालन में पीछे नहीं रहें। समाज के विकास के साथ बिहार के विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लए मैंने अनेकों लोगों से विचार-विमर्श किया। परामर्श के क्रम में मुझे ऐसा महसूस हुआ कि लोग ये सोचते हैं कि मारवाड़ी सम्मेलन की अधिकांश गतिविधियां पटना में हो रही है। इस धारणा को खत्म करने, सम्मेलन को व्यापकता प्रदान करने के लिए मैंने कई योजनाएं बनायी हैं जिन्हें विभिन्न प्रकोष्ठों की स्थापना से कार्यान्वित करना चाहता हूं।

मैं वैचारिक स्वतंत्रता का पक्षधर हूं और स्वस्थ आलोचना की कद्र करता हूं। आलोचना करें पर निंदा से परहेज करें। समाज को जोड़ें, तोड़े नहीं। अपनी प्रतिभा और गुणों का बिहार के विकास में सदुपयोग करें और अपनी जड़ें मजबूत करें। कई बार स्थानीय स्तर पर जातिवादी संकीर्ण सोच के कारण मारवाड़ी समाज के युवा प्रतिभा के बावजूद पिछड़ जाते हैं, ऐसे युवाओं के भविष्य को कैसे सुरक्षित रखा जाय और विकास की मूलधारा से जोड़ा जाय-यह हमारे लिए एक विचारणीय प्रश्न है और इस दिशा में आपके मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

मैं निम्न प्रकोष्ठों की स्थापना कर मारवाड़ी सम्मेलन का विस्तार करना चाहता हूँ।

1. संगठन प्रकोष्ठ
2. समाज कल्याण एवं सेवा प्रकोष्ठ
3. सरकारी समन्वय प्रकोष्ठ
4. निवेश (इन्वेस्टमेंट) प्रकोष्ठ
5. स्वास्थ्य प्रकोष्ठ
6. कृषि प्रकोष्ठ
7. शिक्षा प्रकोष्ठ
8. युवा, संस्कृति, संस्कार एवं खेलकूद प्रकोष्ठ
9. विधि प्रकोष्ठ
10. व्यावसायिक प्रकोष्ठ
11. रोजगार प्रकोष्ठ
12. विवाह परिचय प्रकोष्ठ
13. मीडिया एवं अनुसंधान प्रकोष्ठ
14. भ्रमण (यात्रा) प्रकोष्ठ
15. जनगणना प्रकोष्ठ
16. उद्योग एवं कुटीर उद्योग प्रकोष्ठ
17. माइक्रो फाइनांस प्रकोष्ठ
18. महिला प्रकोष्ठ
19. बिहार मारवाड़ी प्रवासी प्रकोष्ठ

समयाभाव के कारण सभी प्रकोष्ठों का विस्तृत विवरण नहीं दे पा रहा हूं, परन्तु सभी प्रकोष्ठ एवं स्वतंत्र इकाई के रुप में कार्य करेंगे और अपनी भरपूर उपयोगिता सिद्ध करेंगे। जो महानुभाव जिस प्रकोष्ठ का दायित्व संभाल कर उस प्रकोष्ठ के कार्य को जिला स्तर पर प्रकोष्ठ का गठन कर आगे बढ़ाने का प्रयत्न करें। यद्यपि ये प्रकोष्ठ मारवाड़ी सम्मेलन के प्रति जिम्मेवार होंगे, पर उनके कार्य में कोई भी हस्तक्षेप नहीं होगा, ये मेरा आश्वासन है। आज बिहार सरकार राज्य के विकास एवं कल्याण के लिए कई कार्य कर रही है जिसकी जानकारी बहुत लोगों को नहीं है। प्रकोष्ठों के माध्यम से योजनाओं की विस्तृत जानकारी लोगों तक सुगमता पूर्व पहुंचायी जा सकेगी।

निर्माण एवं विकास निधि ट्रस्ट-इस सम्बंध में मैंने समाज के काफी लोगों से सुझाव मांगा। सबों ने अपनी-अपनी राय दी। स्कूल, अस्पताल, छात्रावास। मैं यह चाहूंगा कि इस ट्रस्ट के अंतर्गत कौन सा श्रेष्ठ कार्य पहले किया जाये जो समाज के लिए सर्वाधिक आवश्यक है। इस संदर्भ में मैं आप सभी से सुझाव आमंत्रित करता हूं और एक सलाहकार समिति का गठन करने जा रहा हूं जो आपके सुझाव पर विचार करते हुए इस ट्रस्ट से विमर्श कर आवश्यक निर्णय लेंगे। इस कार्य की निधि की व्यवस्था के लिए मैंने लोगों से वार्तालाप किया और लोगों ने सुझाव दिया कि आप पहले कार्य का निर्धारण कर लें। उन्होंने अर्थ संग्रह के अभियान में भी पूरा साथ देने का भरोसा जताया।

बड़े हर्ष के साथ सूचित कर रहा हूं कि इस ट्रस्ट में पूरे बिहार के विभिन्न लोगों द्वारा अब तक 51 लाख रु. की सहमति प्राप्त हो चुकी है। मैं वैचारिक स्वतंत्रता का पक्षधर हूं और स्वस्थ आलोचना की कद्र करता हूं। आलोचना करें पर निंदा से परहेज करें। समाज को जोड़ें, तोड़े नहीं। अपनी प्रतिभा और गुणों का बिहार के विकास में सदुपयोग करें और अपनी जड़ें मजबूत करें। कई बार स्थानीय स्तर पर जातिवादी संकीर्ण सोच के कारण मारवाड़ी समाज के युवा प्रतिभा के बावजूद पिछड़ जाते हैं, ऐसे युवाओं के भविष्य को कैसे सुरक्षित रखा जाय और विकास की मूलधारा से जोड़ा जाय-यह हमारे लिए एक विचारणीय प्रश्न है और इस दिशा में आपके मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

न शिकवा शिकायत न उपालम्भ,
आओ मिलकर करें आगे की यात्रा आरम्भ।
करके मंगल कामना थाम रया थारो हाथ।
म्हे थारा ऋणी हाँ धन्यवाद क साथ।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का २७वां प्रादेशिक अधिवेशन

निवर्तमान अध्यक्ष कमल कुमार नोपानी का वक्तव्य

22 मार्च 2009 को 26वें अधिवेशन में समाज द्वारा प्रदेश अध्यक्ष की जो जिम्मेवारी सौंपी थी वह आज पूरी हो रही है। सम्मेलन का इतिहास बहुत पुराना रहा है, पूर्व में जो भी माननीय अध्यक्ष हुए हैं, उन्होंने जिस लग्न से सम्मेलन को मजबूत करने का भरपूर प्रयास किया है, उसी कड़ी में हमने आप सभी के सहयोग से एक ईंट जोड़ने का प्रयास किया। सम्मेलन द्वारा विगत दो वर्षों में जो भी नई योजना शुरू की गई, जैसे-स्थायी पनशाला, प्रतिभा सम्मान समारोह, आडम्बर में कमी, दीपावली मिलन समारोह, कम्बल वितरण, सभाकक्ष एवं कार्यालय का जीर्णोद्धार, गरीब कन्याओं की शादी में सहयोग, शिक्षा हेतु आर्थिक सहयोग आदि-आदि कार्य किये गये हैं।

यहाँ यह कहना आवश्यक है कि समाज के महानुभावाओं के प्रयास से सभाकक्ष, कार्यालय का जीर्णोद्धार हुआ है, जिसमें पटना नगर शाखा के सभी सदस्य एवं निवर्तमान अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार झुनझुनवाला सहित समाजसेवी श्री दशरथ कुमार गुप्ता एवं सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष स्व. मोतीलाल सुरेका के पुत्र रमेश सुरेका द्वारा संचालित गायत्री-मोती लाल सुरेका स्मृति समिति पटना का नाम लेना आवश्यक है, जिनके सहयोग से सौन्दर्यीकरण का कार्य सम्पन्न हुआ है।

हमारे समाज में तिलक-दहेज की प्रथा एक त्रासदी बनकर उभर रही है। इस प्रथा पर सरकारी कानून के बावजूद किसी-न-किसी बहाने दहेज को लेकर धन की लिप्सा बढ़ती जा रही है। आश्चर्यजनक बात तो यह है कि वर पक्ष से ज्यादा इन दिनों कन्या पक्ष दहेज के कानून के बहाने बहुत-कुछ समेट लेना चाहती है, चाहे कोई भी पक्ष हो यह एक सामाजिक कोढ़ है जिसे जड़ से मिटाना आवश्यक है।

सम्मेलन द्वारा जो भी कार्य हुए हैं, उसका मूल्यांकन आपको करना है, हमारा जो भी दो वर्षों का अनुभव रहा है या जो कार्यों में कमी रही, उसका जिक्र करना आवश्यक है।

सम्पूर्ण शाखाओं का दौरा नहीं हो पाया किन्तु जो लगभग 50 शाखाओं का दौरा हुआ, उससे यह महसूस हुआ कि शाखा को संगठन की दृष्टि से मजबूत करने के लिए दौरा आवश्यक है। सभी शाखाओं के पदाधिकारियों से यह आग्रह है कि दो वर्षों में चुनाव कराकर प्रदेश को सूचना देनी चाहिए, समाज हित में पद पर रहकर काम न करना यह उचित नहीं है, इसमें सभी सदस्यों की सहभागिता जरूरी है।

मैंने कई अन्य संस्थाओं का भी दौरा किया जिसमें हमने देखा कि 'अल्फावेट' नामक संस्था के अंतर्गत लाचार बच्चे-बच्चियों के लिए बिहार में शिक्षा अभियान चलाया जा रहा है, संस्था उन बच्चों को शिक्षा प्रदान करती है, जिन्हें पढ़ने का कोई साधन नहीं है। यह बहुत हर्ष की बात है।

नारी सशक्तिकरण के इस दौर में हमने वैसी संस्थाओं का भी दौरा किया, जो नारी समाज के लिए कृतसंकल्प हैं। ऐसी संस्थाओं में 'प्रयास-भारती' एक ऐसी संस्था है जो अनैतिकता के गर्त में ढकेले जाने वाली किशोरियों का उद्धार करती है। उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का सराहनीय प्रयास कर रही है।

हमारे समाज में तिलक-दहेज की प्रथा एक त्रासदी बनकर उभर रही है। इस प्रथा पर सरकारी कानून के बावजूद किसी-न-किसी बहाने दहेज को लेकर धन की लिप्सा बढ़ती जा रही है। आश्चर्यजनक बात तो यह है कि वर पक्ष से ज्यादा इन दिनों कन्या पक्ष दहेज के कानून के बहाने बहुत-कुछ समेट लेना चाहती है, चाहे कोई भी पक्ष हो यह एक सामाजिक कोढ़ है जिसे जड़ से मिटाना आवश्यक है।

आडम्बर को कम करने हेतु एक सफल प्रयास की शुरूआत की गई है। इसे जोर-शोर से समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपने उपर लेकर इस यज्ञ को सफल बनाने हेतु प्रयास करने होंगे, आज नहीं तो कल इस अभिशाप पर विजय पाने में समाज अवश्य सफल होगा। विभिन्न शाखाओं को पत्र कोरियर डाक द्वारा भेजने की व्यवस्था है, लेकिन सम्मेलन पूर्णरुप से सफल नहीं हो पाया, इसके लिए सार्थक प्रयास की आवश्यकता है। सम्मेलन को बराबर समाज की गरीब कन्याओं की शादी, शिक्षा, चिकित्सा में आर्थिक सहयोग हेतु पत्र आते रहते हैं किन्तु इसके लिए सम्मेलन में कोई व्यवस्था नहीं होने के कारण कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिसकी आवश्यकता है।

अंत में, मेरे कार्यकाल में मुझसे, अन्य पदाधिकारियों एवं सदस्यों से कोई भूल, त्रुटि हुई हो या पीड़ा पहुंची हो तो मैं सबों की तरफ से क्षमा प्रार्थी हूं।

सम्मेलन ने किया मामराज अग्रवाल व जुगल किशोर सराफ का सम्मान

श्री मामराज अग्रवाल का सम्मान करते राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया व श्री जे.के. सराफ का सम्मान करते पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा। साथ में हैं राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री संजय हरलालका व श्री कैलाशपति तोदी।

कोलकाता। शिक्षा के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान देने के लिए भारत सरकार द्वारा श्री मामराज अग्रवाल को पद्मश्री सम्मान दिये जाने की घोषणा तथा फिलास्पी के क्षेत्र में शोध के लिए श्रीलंका विश्वविद्यालय द्वारा श्री जुगल किशोर सराफ को डाक्टरेट की उपाधि से अलंकृत किये जाने पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा उन्हें पुष्प गुच्छ, शॉल, पगड़ी व सम्मेलन का प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। हिन्दुस्तान क्लब में आयोजित सम्मान समारोह की अध्यक्षता करते हुए सम्मेलन सभापति श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने कहा कि हमें समाज के ऐसे व्यक्तियों से प्रेरणा मिलती है। हमारे कार्यों के द्वारा राज्य सरकारों से भी हमें मान-सम्मान व गौरव मिले, इस हेतु हमें प्रयास करना चाहिए। हमें आपसी द्वेष को त्याग कर प्रेम व्यवहार बढ़ाना चाहिए और अपने समाज की प्रतिभाओं को आगे लाना चाहिए। हमें गर्व से कहना चाहिए कि हम मारवाड़ी हैं। प्रधान वक्ता सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में मामराजजी को मिला यह सम्मान मारवाड़ी समाज के लिए विशेष महत्वपूर्ण है। श्री सराफ हमेशा सबके सुख-दुःख में साथ रहते हैं। सामाजिक कार्यों में उनकी गहरी रूचि है। हम अपने लोगों को आगे लाने में हिचकिचाते हैं, यह हमारे समाज की कमी है। इसका खामियाजा भी हमें भुगतना पड़ता है। हमारी कमियां तो लोगों को दिख जाती हैं किन्तु खूबियां दबी रह जाती हैं। सम्मेलन का उद्देश्य समाज की बदलती तस्वीर को लोगों के समक्ष रखना है। श्री जुगल किशोर जैथलिया ने कहा कि इन्हें समाज की स्वीकृति तो पहले से ही मिली हुई थी पर अब सरकार ने भी अपनी स्वीकृति दे दी है। आपने कहा कि ऊंचाई पर पहुँचना सहज है लेकिन वहां टिके रहना कठिन होता है। श्री हरिप्रसाद बुधिया ने कहा कि यह गौरब हम सबका है, ये तो समाज के प्रतिनिधि हैं। श्री प्रह्लादराय अग्रवाल ने कहा कि अपनों को जब सम्मान मिलता है तो बहुत खुशी होती है। श्री सज्जन भजनका ने कहा कि मारवाड़ी समाज का राष्ट्र निर्माण में बहुत बड़ा योगदान है फिर भी ऐसे सम्मान प्राप्त होने की खबरें यदा-कदा ही मिलती हैं। प.बंग. प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजवासिया ने कहा कि यह सम्मान हमारे पूरे समाज का है। युवा पीढ़ी को इससे प्रेरणा मिलेगी। इसके अलावा श्री बी.डी. सुरेका, सम्मेलन के पूर्व महामंत्री श्री भानीराम सुरेका आदि ने भी वक्तव्य रखा। राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ ने आगत अतिथियों का स्वागत किया। धन्यवाद ज्ञापन राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया एवं संचालन संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका ने किया।

बंगाल में हिंदी भाषियों की राजनैतिक हैसियत

- सीताराम शर्मा

पश्चिम बंगाल में अपनी भारी तादाद और लगभग प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण अवदान एवं भूमिका के बावजूद हिन्दी भाषी राज्य की राजनीति में हमेशा हाशिये पर ही रहे हैं। यहां सभी राजनैतिक दल चुनाव के समय ही उनकी सुधि लेते हैं लेकिन उनके वोटों के लिये, उन्हें टिकट देने के लिये नहीं। राजनीति में उनका प्रतिनिधित्व आबादी के अनुपात में काफी कम या नगण्य ही रहा है। हिन्दी भाषियों की इस स्थिति के लिये कौन से लोग या कारण जिम्मेवार है? राजनैतिक पार्टियां, राज्य की राजनीति या हिन्दीभाषी स्वयं?

बंगाल में बसा हिन्दीभाषी मुख्यत: राजस्थान-हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश बिहार से है। राजस्थान-हरियाणा का प्रवासी मारवाड़ी समाज के रूप में परिचित है तथा मुख्यत: व्यवसाय-धन्धे से जुड़ा है। वहीं उत्तर प्रदेश-बिहार के बन्धुओं को 'देशवाली' के नाम से जाना जाता है एवं जो अधिकतर श्रम से सम्बन्धित है।

कहा जाता है कि जितने मारवाड़ी राजस्थान के किसी एक शहर में नहीं बसते उससे कहीं अधिक उनकी संख्या कोलकाता में है जबकि वर्तमान में उनका कुल मात्र एक प्रतिनिधि विधान सभा में है। मैंने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का अध्यक्षीय पदभार ग्रहण करते हुए भुवनेश्वर 2006 में अपने अभिभाषण में मारवाड़ी समाज में राजनैतिक चेतना का आह्वान करते हुए नारा दिया था कि 'कोषाध्यक्ष नहीं, अध्यक्ष बनो' यानि धन के बल पर राजनीति की बजाय जमीन से जुड़ो। राजनैतिक चेतना से मेरा तात्पर्य है, मतदाता सूची में अपना नाम लिखवायें, मतदान में हिस्सा लें एवं अपनी राजनैतिक सोच एवं विचार के अनुसार देश की राजनीति में सक्रिय भागीदारी निभायें।

स्वतंत्रता के पूर्व : बंगाल में हिन्दीभाषियों के राजनैतिक प्रतिनिधित्व के आंकड़ों पर नजर डाली जाये तो लगता है इसकी राजनैतिक हैसियत में लगातार गिरावट आयी है। स्वतंत्रता के पूर्व भारत अधिनियम 1935 के अंतर्गत, गठित प्रथम संयुक्त बंगाल विधानसभा के कुल 250 सदस्यों में 5 हिन्दीभाषी सदस्य थे - (1) प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका (कलकत्ता पश्चिम क्षेत्र से) (2) ईश्वर दास जालान (इसी क्षेत्र से बाद में निर्वाचित) (3) देवी प्रसाद खेतान (इण्डियन चैम्बर ऑफकॉमर्स) (4) राय बहादुर मंगतूलाल तापड़िया (मारवाड़ी एसोसिएशन) (5) आनन्दीलाल पोद्दार (मारवाड़ी एसोसिएशन)। व्यापार एवं उद्योग के प्रतिनिधियों के रूप में विभिन्न चेम्बरों को विधानसभा में सदस्य मनोनीत करने का अधिकार था। उस समय की मारवाड़ी व्यवसायियों की महत्वपूर्ण संस्था मारवाड़ी एसोसिएशन को भी यह अधिकार दिया गया था।

कम लोग जानते हैं कि 30 जून 1947 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने डा. प्रफुल्ल चन्द्र घोष को जो स्वतंत्र भारत में पश्चिम बंगाल के प्रथम मुख्यमंत्री बने, एक पत्र लिखकर सुझाव दिया था कि 'सरदार बल्लभ भाई पटेल ने मुझे एक संदेश भेजा है कि आपके मंत्रिमण्डल में एक मारवाड़ी मंत्री- बद्रीदास गोयनका या खेतान होना चाहिए। मुझे लगता है कि यह करना उचित होगा, नहीं करना अनुचित होगा।' मुख्यमंत्री डा. घोष ने गांधीजी के सुझाव को नहीं माना। कुछ महीनों में यह सरकार भंग हो गयी एवं 23 जनवरी 1948 को डा. विधानचन्द्र राय के मुख्यमंत्रित्व में नयी सरकार का गठन हुआ।

इसी काल में विधान परिषद (अपर हाऊस) में एच. पी. पोद्दार (1939-40), मंगतुराम जयपुरिया (1943-47) एवं विजय सिंह नाहर (1946-47) सदस्य रहे।

यह संयोग की बात है कि जिस तरह पश्चिम बंगाल विधान सभा के अध्यक्ष हिन्दी भाषी ईश्वर दास जालान रहे उसी तरह स्वतंत्रता के पश्चात् जन प्रतिनिधि नियम 1950 के अर्न्तगत गठित पश्चिम बंगाल विधान परिषद (अपर हाऊस) की प्रथम बैठक (18 जून 1952) एक अन्य जाने-माने हिन्दी भाषी राजनेता विजय सिंह नाहर की अध्यक्षता में हुई।

गिरता हिन्दीभाषी प्रतिनिधित्व : एक तरफ जहां विधानसभा की कुल सदस्यता 1952 में 187 से बढ़कर 2006 में 294 तक पहुंच गयी यानि 107 सीटों की बढ़ोतरी वहीं हिन्दीभाषी विधायकों की संख्या 1952 में 11 से घटकर 2006 की विधानसभा में केवल 6 रह गयी।

कहा जाता है कि जितने मारवाड़ी राजस्थान के किसी एक शहर में नहीं बसते उससे कहीं अधिक उनकी संख्या कोलकाता में है जबकि वर्तमान में उनका कुल मात्र एक प्रतिनिधि विधान सभा में है। मैंने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का अध्यक्षीय पदभार ग्रहण करते हुए भुवनेश्वर 2006 में अपने अभिभाषण में मारवाड़ी समाज में राजनैतिक चेतना का आह्वान करते हुए नारा दिया था कि 'कोषाध्यक्ष नहीं, अध्यक्ष बनो' यानि धन के बल पर राजनीति की बजाय जमीन से जुड़ो। राजनैतिक चेतना से मेरा तात्पर्य है, मतदाता सूची में अपना नाम लिखवायें, मतदान में हिस्सा लें एवं अपनी राजनैतिक सोच एवं विचार के अनुसार देश की राजनीति में सक्रिय भागीदारी निभायें।

पश्चिम बंगाल से विधान सभा के लिये मनोनीत एवं निर्वाचित हिन्दीभाषी सदस्यों में एक लगातार कमी निम्न आंकड़े प्रस्तुत करते हैं।

1952 की प्रथम विधान सभा : प्रथम चुनाव में गठित विधानसभा में निर्वाचित हिन्दी भाषी सदस्य थे (1) मंगल

दास भगत (कां.) सेन्ट्रल डुअर्स, (2) पशुपति झा (कां.) मनीचाक, (3) बसंतलाल मुरारका (कां.) नानूर, (4) गोलवदन त्रिवेदी (कां.) भाटपाडा, (5) जय नारायण शर्मा (कां.) कुल्टी, (6) दयाराम बेरी (कां.) भाटपाड़ा, (7) कृष्ण कुमार शुक्ला (कां.) टीटागढ़, (8) राम लगन सिंह (कां.) जोड़ाबागान, (9) ईश्वर दास जालान (कां.) बड़ाबाजार, (10) आनन्दी लाल पोद्दार (कां.) कोलुटोला एवं (11) रंतमल अग्रवाल (किशनगंज)।

इसी तरह 1957 एवं 1962 में कुल सदस्य संख्या क्रमश: 195 एवं 252 में से 8 हिन्दी भाषी सदस्य - गोलबदन त्रिवेदी (भरतपुर), बनारसी प्रसाद झा (कुल्टी), नारायण चौबे (खड़गपुर), आनन्दी लाल पोद्दार (जोड़ासांकू), ईश्वर दास जालान (बड़ाबाजार), विजय सिंह नाहर (चौरंगी) कृष्ण कुमार शुक्ला (टीटागढ़) एवं सीताराम गुप्ता (भाटपाड़ा) निर्वाचित हुए। 1967 में विधान सभा की कुल सदस्यता बढ़कर 280 हो गयी और हिन्दी भाषी विधायकों की संख्या 8 से बढ़कर 9 हुई। राजेन्द्र सिंह सिंघी (स्वतंत्र पार्टी) मानिकचक से विजयी हुए। कोलुटोला से आनन्दी लाल पोद्दार की जगह राजेन्द्र कुमार पोद्दार, भाटपाड़ा से सीताराम गुप्ता की जगह दयाराम बेरी एवं कुल्टी से बनारसी प्रसाद झा की जगह जयनारायण शर्मा निर्वाचित हुए। साथ ही गोलबदन त्रिवेदी, विजय सिंह नाहर, ईश्वरदास जालान, रंतमल अग्रवाल एवं कृष्ण कुमार शुक्ला अपने निर्वाचन क्षेत्रों से पुनर्निर्वाचित हुए। 1969 के चुनाव में हिन्दीभाषी सदस्यों की संख्या घटकर 5 रह गयी। सीताराम गुप्ता (सीपीएम) भाटपाड़ा, देवकी नन्दन पोद्दार (कां.) जोड़ासांकू, रामकृष्ण सरावगी (कां.) बड़ाबाजार, विजय सिंह नाहर (कां.) बहूबाजार एवं ज्ञान सिंह सोहनपाल (कां.) खड़गपुर। 1971 में 6 हिन्दीभाषी विजयी हुए, रामप्यारे राम (कां.) कवितीर्थ से तथा सत्यनारायण सिंह (कां) भाटपाड़ा से, पोद्दार, सरावगी, नाहर एवं सोहनपाल के अतिरिक्त।

1972 में 9 - छेदीलाल सिंह (सीपीएम), सत्यनारायण सिंह (कां.), कृष्ण कुमार शुक्ला (कां.), लाल बहादुर सिंह (कां.), देवकी नन्दन पोद्दार (कां.), रामकृष्ण सरावगी (कां.), विजयसिंह नाहर (कां.), राम प्यारे राम (कां.) एवं ज्ञान सिंह सोहनपाल (कां.)।

1977 में (कुल सदस्य संख्या बढ़कर 294) निर्वाचित 4 - छेदीलाल सिंह (सीपीएम) गार्डेनरीच, सीताराम गुप्ता (सीपीएम) भाटपाड़ा, विष्णुकांत शास्त्री (जनता) जोड़ासांकू एवं रवि शंकर पाण्डे (जनता) बड़ाबाजार। 1977 में कांग्रेस के सभी उम्मीदवार पराजित होने से यह नतीजा आया।

1982 में भी 5 - गंगा प्रसाद साव, सीताराम गुप्ता, देवकी नन्दन पोद्दार, राजेश खेतान एवं ज्ञान सिंह सोहनपाल जबकि 1987 में भी 5 रह गयी। पोद्दार, खेतान एवं ज्ञानसिंह पुनर्निर्वाचित हुए तथा अन्य दो सदस्य थे सत्यनारायण सिंह (कां.) भाटपाड़ा एवं गंगाप्रसाद साव (कां.) टीटागढ़। 1991 में 6 तथा 1996 में 7 सदस्य निर्वाचित हुए। पुनर्निर्वाचित सदस्यों के अतिरिक्त थे - राजदेव गोवाला (सीपीएम) बेलगछिया पश्चिम, लगन देव सिंह (सीपीएम) हावड़ा उत्तर, प्रवीण कुमार साव (सीपीएम) टीटागढ़ से तथा राम प्यारे राम (कां.) कवि तीर्थ से। 2001 के विधान सभा चुनाव में 7 हिन्दी भाषी विधायक निर्वाचित हुए - अर्जुन सिंह (भाटपाड़ा), सत्यनारायण बजाज (जोड़ासांकू), राम प्यारे राम (कवि तीर्थ) राजदेव गोवाला (बेलगछिया पश्चिम), लगन देव सिंह (हावड़ा उत्तर), डॉ प्रवीण कुमार साव (टीटागढ़) एवं ज्ञान सिंह सोहनपाल (खड़गपुर)।

गत 2006 के विधान सभा चुनाव में निर्वाचित हिन्दी भाषी 6 विधायकों में शामिल थे - दिनेश बजाज (टीएमसी) जोड़ासांकू, राम प्यारे राम (कां.) कवितीर्थ, लगन देव सिंह (सीपीएम) हावड़ा उत्तर, डॉ प्रवीण कुमार साव (सीपीएम) टीटागढ़, अर्जुन सिंह (टीएमसी) भाटपाड़ा एवं ज्ञान सिंह सोहनपाल (कां.) खड़गपुर।

विधान परिषद : 1969 की संयुक्त मोर्चा सरकार द्वारा विधान परिषद (अपर हाऊस) के विघटन के पहले पश्चिम बंगाल विधान परिषद में हिन्दी भाषियों को नामजद किया जाता रहा है। 1952 एवं 1954 में विजय सिंह नाहर एवं पन्नालाल सरावगी, 1956 में इनके साथ राम कुमार भुवालका को मनोनीत किया गया। 1958 में पांच हिन्दी भाषी सदस्य निर्वाचित हुए - राम कुमार भुवालका, पशुपति झा, बद्री प्रसाद पोद्दार, पन्ना लाल सरावगी एवं राम लगन सिंह। 1960 में इन्हें पुन: निर्वाचित/मनोनीत किया गया। 1962 में पांच सदस्य थे - राम कुमार भुवालका, जी. ए. दोसानी, पशुपति झा, गजानन्द खेतान एवं राम लगन सिंह। 1964 में किशोरी लाल ढ़ाढनिया , पशुपति झा, गजानन्द खेतान, धर्मचन्द सरावगी एवं राम लगन सिंह। 1966, 67 एवं 69 में गोविन्दलाल सरावगी, धर्मचन्द सरावगी एवं राम लगन सिंह तीनों सदस्य रहे।

बंगाल से लोकसभा में : पश्चिम बंगाल से लोकसभा में हिन्दी भाषियों का निर्वाचन इक्का-दुक्का रहा है। 1952 से 2005 के बीच हुए 15 संसदीय चुनावों में इने-गिने हिन्दी भाषी प्रार्थी ही संसद पहुंच पाये हैं। 1977 में विजय सिंह नाहर (जनता), 1980 एवं 1984 में मेदिनीपुर से सीपीआई उम्मीदवार नारायण चौबे, 1991 एवं 2005 में दार्जिलिंग से इन्द्रजीत (कां.) एवं जसवन्त सिंह (भाजपा) क्रमश: निर्वाचित हुए हैं। इन्द्रजीत एवं जसवन्त सिंह राजनैतिक कारणों से गोरखा लीग के समर्थन से निर्वाचित हुए एवं वे पश्चिम बंगाल से नहीं है।

1952 में कांग्रेस उम्मीदवार प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका ने कलकश्रा उत्तर पश्चिम से आरएसपी उम्मीदवार एवं सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. मेघनाथ साहा के विरुद्ध चुनाव लड़ा एवं 23 हजार वोटों से पराजित हुए। इसी चुनाव में चिंतक व विचारक तथा जो बाद में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने श्री भंवरमल सिंघी (निर्दलीय) भी चुनाव में उतरे थे व 4686 मत प्राप्त कर तीसरे स्थान पर थे। 1952 में बंगाल से कुल 26 लोकसभा सदस्य निर्वाचित होते थे जो 1977 के बाद से 42 हैं।

राज्य सभा में : पिछले 58 वर्षों में कुल 10 हिन्दी भाषी बंगाल से राज्य सभा के लिये निर्वाचित किये गये हैं। राजपत सिंह दुग्गड़ (1958-72), बेनी प्रसाद अग्रवाल (1954-60), मेहर चन्द खन्ना (1956-62), प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका

(1956-62), सीताराम डागा (1957-58), पन्नालाल सरावगी (1962-63), राम कुमार भुवालका (1962-68), सरला माहेश्वरी (1990-2005), चन्द्रकला पाण्डेय (1993-2005) एवं दिनेश त्रिवेदी (2002-2008)।

हिन्दी भाषी मंत्री : यह उल्लेखनीय है कि गत 30 वर्षों से अधिक से पश्चिम बंगाल के मंत्रिमण्डल में कोई हिन्दी भाषी मंत्री नहीं रहा है। 71-72 में रामकृष्ण सरावगी सिद्धार्थ शंकर राय की सरकार में आखिरी हिन्दी भाषी मंत्री थे। जबकि 1952 में विधान चन्द्र राय के प्रथम मंत्रिमण्डल में ईश्वर दास जालान स्वायत्त मंत्री नियुक्त किये गये। इसके बाद लगातार कम से कम एक हिन्दी भाषी मंत्री बनाया गया। 1957 में पुन: श्री जालान नियुक्त हुए। 1962 में विजय सिंह नाहर श्रम मंत्री बने साथ में कानून मंत्री के रूप में श्री जालान। पहली संयुक्त मोर्चा सरकार (2 मार्च 1967) में कोई हिन्दी भाषी मंत्री नहीं रहे जबकि 21 नवम्बर 1968 को प्रगतिशील गणतांत्रिक मोर्चा श्री प्रफुल्ल चंद्र घोष की सरकार में स्वतंत्र पार्टी से निर्वाचित राजेन्द्र सिंह सिंघी राज्य यातायात मंत्री रहे। बाद में इसी सरकार में विजय सिंह नाहर ने भी कांग्रेस की ओर से पूर्ण मंत्री का भार सम्भाला। 1969 की दूसरी संयुक्त मोर्चा सरकार में कोई हिन्दी भाषी मंत्री नही रहा। जबकि 1971 में अजय मुखर्जी के मुख्य मंत्रित्व में गठित गणतांत्रिक मोर्चे की सरकार में विजय सिंह नाहर गृह, विकास एवं सूचना मंत्रालय के साथ उप मुख्यमंत्री बने। इसी मंत्रिमंडल में ज्ञान सिंह सोहनपाल लघु उद्योग मंत्री नियुक्त हुए। 1972 में कांग्रेस की सिद्धार्थ शंकर राय की सरकार में ज्ञान सिंह सोहनपाल यातायात व संसदीय कार्य तथा राम कृष्ण सरावगी जनकार्य एवं आवास मंत्री बनाये गये।

यह एक तथ्य है कि एक तरफ जहां राज्य में हिन्दी भाषी जनसंख्या में लगातार वृद्धि हुई है वहीं राजनैतिक प्रतिनिधित्व में कमी आयी है। इसके लिये क्या हिन्दी भाषियों की सक्रिय राजनीति के प्रति उदासीनता दायी है या राजनैतिक चेतना का अभाव। राज्य की बड़ी राजनीतिक पार्टियों का यह दायित्व बनता है कि प्रांत के सभी वर्गों एवं समुदाय के सही प्रतिनिधित्व के लिये प्रयास करे। विधान सभा में एंग्लो इंडियन समुदाय के लिये मनोनीत सदस्य का प्रावधान है। अल्पसंख्यक समुदाय के रुप में मुस्लिम समुदाय का समुचित प्रतिनिधित्व है जो सर्वथा उचित है। 2006 के विधान सभा में 294 की कुल सदस्यता में मुस्लिम विधायकों की संख्या 44 है। जबकि 1952 में 187 की कुल सदस्यता में यह संख्या 23 थी।

यह खुशी की बात है कि पश्चिम बंगाल विधान सभा में महिला विधायकों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है। 1952 में केवल 7 महिला विधायक थीं जबकि 2006 में निर्वाचित विधान सभा में यह संख्या बढ़कर अब 41 पर है। सूचीगत जातियों की आरक्षित सीटों में समयानुसार एवं आवश्यकतानुसार वृद्धि की गयी है। 1952 में आरक्षित सीटों की संख्या 52 थी जो 2006 में बढ़कर 76 हो गयी है जिसका स्वागत एवं समर्थन किया जाना चाहिए। हिन्दी भाषी आरक्षण की मांग नहीं करता लेकिन राजनैतिक प्रतिनिधित्व की कामना करता है एवं राजनैतिक दलों की इस ओर पहल की अपेक्षा करता है। ●

प. बंगाल विधानसभा चुनाव में मारवाड़ी प्रार्थी

हमें खुशी है कि पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में विभिन्न राजनैतिक दलों द्वारा मारवाड़ी समाज के प्रार्थी मनोनीत किये गये हैं। सम्मेलन ने राजनैतिक चेतना अभियान के अन्तर्गत समाज के लोगों से अधिक से अधिक मतदाता बनने, मतदान करने एवं सक्रिय राजनैतिक भूमिका निभाने की बराबर अपील की है। इस विषय में सम्मेलन मारवाड़ी समाज से आत्मचिंतन करने का आग्रह करता है।

अभी तक प्राप्त सूचना के आधार पर निम्नलिखित मारवाड़ी प्रार्थी इस चुनाव के लिये मनोनीत किये गये हैं।

प्रार्थी का नाम
श्रीमती मीना देवी पुरोहित
विधानसभा केन्द्र
जोड़ासांकू
किस पार्टी से
भारतीय जनता पार्टी

प्रार्थी का नाम
श्री नारायण जैन
विधानसभा केन्द्र
भवानीपुर
किस पार्टी से
मार्क्सवादी कम्युनिष्ट पार्टी

प्रार्थी का नाम
श्री नन्दलाल सिंहानिया
विधानसभा केन्द्र
मानिकतल्ला
किस पार्टी से
भारतीय जनता पार्टी

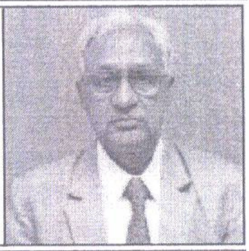

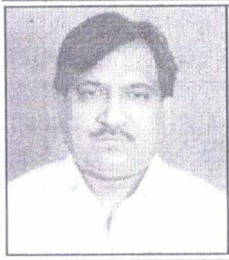

प्रार्थी का नाम
श्री गनेश धनानिया
विधानसभा केन्द्र
श्यामपुकुर
किस पार्टी से
भारतीय जनता पार्टी

प्रार्थी का नाम	विधानसभा केन्द्र व पार्टी
श्रीमती पिंकी अग्रवाल	**नवद्वीप (भाजपा)**

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का होली मिलन समारोह

होली की शुभकामनाएं देते प्रान्तीय अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया एवं संगीतमय कार्यक्रम की प्रस्तुति।

कोलकाता। पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का होली प्रीति सम्मेलन सिद्धार्थ उद्यान में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम व आपसी मेल मिलाप के साथ सम्पन्न हुआ। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री संतोष सराफ ने कहा कि होली आपसी मेल बढ़ाकर मतभेद मिटाने का पर्व है। उन्होंने सम्मेलन के सेवाभावी कार्यक्रमों की सराहना की। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने समाज में दिखावा एवं फिजूलखर्ची पर चिंता प्रकट करते हुए इसके खिलाफ सदस्यों को आगे आने की अपील की। प्रान्तीय अध्यक्ष विजय गुजरवासिया ने कहा कि होली रंगों के साथ-साथ भाईचारे का भी त्योहार है। होलिका दहन में सभी बुराइयां जल जाती हैं और समाज में अच्छाइयां आती हैं। उन्होंने बताया कि प्रान्तीय सम्मेलन का अपना स्थायी कार्यालय नहीं था जिससे सेवाकार्यों के संचालन में काफी परेशानी होती थी, अब महानगर में शीघ्र ही स्थायी कार्यालय हो जायेगा। सचिव रामगोपाल बागला ने कहा- मारवाड़ी समाज के दो ही ऐसे त्योहार हैं जब हम आपस में मिलकर अपनी शिकायत एवं शिकवा दूर करते हुए नये साल का प्रारंभ करते हैं। पहले के जामने की होली, होली थी लेकिन अब इसका रुप काफी बदल गया है। आपस में द्वेष-राग बढ़ता ही जा रहा है। ऐसा नहीं होना चाहिए।

कार्यक्रम में महानगर के कई प्रमुख लोगों ने भाग लिया। जिसमें प्रमुख थे विधायक दिनेश बजाज, घनश्याम प्रसाद शोभासरिया, दामोदर प्रसाद विदावतका, महेंद्र गुप्ता, निर्मल गोयल, सीताराम अग्रवाल, कृष्ण कुमार सिंघानिया, जुगलकिशोर जाजोदिया, सूर्यप्रकाश बागला, विष्णुदास मित्तल, राजकुमार अग्रवाल। सुनीता लोहिया, उमा बागड़ी व रेखा चौधरी के संयोजन एवं निर्देशन में राजस्थानी नृत्य-गीत कार्यक्रम पेश किया गया। फतेहपुर की राजस्थानी ढफ पार्टी ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

चक्षु परीक्षण शिविर

श्री अग्रसेन स्मृति भवन, कोलकाता के तत्वावधान में मिदनापुर जिले के गोवर्धन नामक गांव में चक्षु परीक्षण शिविर आयोजित किया गया जिसमें 463 रोगियों का नेत्र परीक्षण किया गया। इनमें से 410 लोगों को नि:शुल्क चश्मा दिया गया। 43 रोगियों के ऑपरेशन का प्रबन्ध किया गया एवं 10 को दवा दी गई। चक्षु परीक्षण के साथ रक्त परीक्षण एवं रक्त चाप का परीक्षण भी किया गया।

श्रद्धांजलि सभा

श्री अग्रसेन स्मृति भवन के तत्वावधान में श्री जुगल किशोर काजड़िया की अध्यक्षता में स्थानीय अग्रवाल समाज द्वारा अग्रवाल समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री किशन मोदी, श्री बद्री प्रसाद अग्रवाल, श्री स्वराज्यमणि अग्रवाल के आकस्मिक निधन पर उन्हें भावभानी श्रद्धांजलि दी गई। इनके निधन पर दो मिनट का मौन धारण कर दिवंगत आत्माओं की शान्ति हेतु परमपिता से प्रार्थना की गई।

राष्ट्र सेवा में लीन है मारवाड़ी सम्मेलन-शोभा बजाज

दुर्गापुर। मानव सेवा से बड़ा धर्म नहीं है और इंसानियत से बड़ा कोई कर्तव्य नहीं है। उक्त बातें डीएसपी महिला समाज की अध्यक्ष शोभा बजाज ने दुर्गापुर मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित कंबल वितरण समारोह में बतौर मुख्य अतिथि एवं उद्घाटन द्वीप प्रज्वलित कर किया। उन्होंने कहा समाज में पिछड़े लोगों को मुख्यधारा से जोड़ने और उनके विकास की दिशा में मारवाड़ी समाज द्वारा किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा जितनी करें कम हैं। इसी से राष्ट्र का विकास का सपना साकार हो सकता है। अतिथियों का स्वागत करते हुए संगठन सचिव अशोक काजड़िया ने संगठन द्वारा जनहित में सामाजिक कार्यों की विस्तृत चर्चा की। यहां गरीबों में 300 कम्बल वितरित किये गये।

कलकत्ता अग्रवाल समिति ने कराया सामूहिक विवाह

श्री कलकत्ता अग्रवाल समिति की ओर से उत्तर हावड़ा के साम गार्डेन में आयोजित सामूहिक विवाह में सात जोड़े विवाह बंधन में बंधे। इस मौके पर साधुराम बंसल, सज्जन बंसल, बलभद्र लाल झुनझुनवाला, गौरांग अग्रवाल, बाबूलाल धनानिया व सीताराम अग्रवाल सहित कई लोगों ने उन्हें आशीर्वाद दिया। समारोह में आर्थिक रूप से संपन्न परिवारों के युवक-युवतियों ने भी सात फेरे लिये। मंत्री श्याम सुंदर सराफ ने बताया कि पूर्व में आयोजित परिचय सम्मेलन के दौरान कुल 258 वर-वधुओं ने भाग लिया था। इनमें 54 युवतियां थीं। श्री सराफ ने कहा कि वर-वधुओं को आवश्यक सभी सामान संस्था की ओर से दिया गया। संस्था के संयुक्त सचिव हरिकिशन निगानिया ने अतिथियों का स्वागत किया।

शोक-समाचार

गोविन्द शर्मा को पत्नी व भातृ शोक

सम्मेलन के वरिष्ठ सदस्य श्री गोविन्द शर्मा की धर्मपत्नी हेमलता देवी एवं भ्राता पं. ओम प्रकाश शास्त्री का विगत माह अकस्मात् देहान्त हो गया। सम्मेलन उनके निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करता है।

भानीराम सुरेका की पुस्तक 'जीवन जो मैंने जिया' का लोकार्पण किया बिरला दम्पत्ति ने

कोलकाता। आम जीवन में आज पुस्तकें कम हो गयी हैं। लोग इंटनरेट व टीवी में ही व्यस्त हैं। इसके बावजूद पुस्तकों की प्रासंगिकता बनी हुई है। अवसाद के क्षणों में पुस्तकें हमारी वास्तविक दोस्त हैं, जो हमारे अवसाद को दूर कर हमें नयी राह दिखाती हैं। यह बातें डॉ. सरला बिरला ने समाजसेवी भानीराम सुरेका की पुस्तक 'जीवन जो मैंने जिया' के लोकार्पण समारोह में कहीं। पुस्तक का लोकार्पण डॉ. सरला बसंत कुमार बिरला ने किया। डॉ. सरला बिरला ने कहा कि पुस्तक में सुरेका जी का जो संस्मरण है, उसमें सुख व दुख दोनों ही हैं। संस्मरण हमें विकल्प प्रदान करते हैं, लेकिन यह हमारे विवेक पर निर्भर है कि हम इसे कैसे ग्रहण करें। श्री सुरेका जी के विवेक ने जिस राह को चुना है, वह समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं। मौके पर लेखक भानीराम सुरेका ने कहा कि मैं जब कक्षा आठ में था, तभी से मैं डायरी लिखता था। वह पन्ने आज भी मेरे पास है, जिसमें से रोशनी व खुशबू आज भी मुझे मिलती है। पुस्तक मेरी डायरी का ही संकलन है। मेरी डायरी मेरे मन का दर्पण है। 25 साल पहले मैं बिरला पार्क में स्वामी अखंडानंद सरस्वती का प्रवचन सुनने गया था, तभी से बिरला दंपति के प्रति मेरे मन में अगाध श्रद्धा है। उन्हीं की प्रेरणा से मैंने डायरी के पन्नों को पुस्तक का रूप दिया। इस अवसर पर सर्वश्री हरि प्रसाद बुधिया, विश्वमित्र सम्पादक प्रकाश चंद अग्रवाल, प्रह्लाद राय अग्रवाल, मदन लाल बामलवा, सीताराम शर्मा, दयानंद आर्य, द्वारिकाप्रसाद डाबड़ीवाल, सांवरमल भीमसरिया, सम्मेलन महामंत्री संतोष सराफ, संयुक्त मंत्री संजय हरलालका, रवि पोद्दार, कमल गांधी आदि ने श्री सुरेका को बधाई दी। स्वागत आदर्श सुरेका व धन्यवाद ज्ञापन श्रवण सुरेका ने किया। मंगलाचरण अनुष्का, नायसा व यशस्वी सुरेका ने किया। इस अवसर पर श्रीकृष्ण खेतान, विधायक दिनेश बजाज, संजय बुधिया, कुंज बिहारी अग्रवाल, जुगलकिशोर जैथलिया सहित अन्य गणमान्य मौजूद थे। सभी विमला-भानीराम सुरेका की शादी की 50वीं वर्षगांठ पर उन्हें शुभकामनाएं दीं।

जिंदगी जिंदादिली का नाम है!

रिटायर्ड वरिष्ठ नागरिकों! मौज मस्ती करने का समय आ गया है

-मनमोहन बागड़ी

यदि आप रिटायर हो गये हैं तो समझिये कि सुनहरा भविष्य आपका इंतजार कर रहा है। अब आप अपनी जिंदगी अपनी मन मर्जी से जी सकते हैं। अब समय आपके काबू में है। अलग-अलग व्यक्तियों के लिये अच्छी जिंदगी जीने का मतलब अलग-अलग होता है। परन्तु आपके लिये यह क्या मायने रखता है? क्या आप आरामदायक जिंदगी जीना चाहते हैं? क्या आप को किसी की मदद करनी है? क्या आपको अच्छे लोगों से दोस्ती बनानी है? तो फिर देरी किस बात की।

अपने शौक को पूरा करिये ; यदि कोई रुचि (हाबी) को आप अब तक पूरा नहीं कर पाये हैं, तो अब समय आ गया है कि उसे आप शुरू कर सकते हैं। अब आपके पास समय और साधनों की कमी नहीं रहेगी। आप लायब्रेरी में जाकर पुस्तकें पढ़ सकते हैं। आप पेंटिंग कर सकते हैं। आप बहुत कुछ कर सकते हैं।

जिंदगी से निवृत मत होइये : यदि आप व्यापार या नौकरी से निवृत हो गये हों तो कोई बात नहीं, जिंदगी से निवृत मत होइये। इसका मतलब यह नहीं कि आप दिन चढ़े तक सोते रहें, क्योंकि आपको नौकरी या व्यापार के लिये तो जाना नहीं है। आप अपने समय का नये सिरे से प्लानिंग करिये। अपनी दिनचर्या को नये सिरे से बदल डालें।

आप अपने आप के प्रति सजग रहिये : प्रति सुबह आप चिंतन करिये कि आज का दिन आपको कैसा बिताना है, आपको दिन भर में क्या-क्या काम करने हैं। ध्यान रहे कि आपको अपने मन-पसंद काम करने हैं। फिर शाम को आपको मनन करना है कि आज का दिन आपका कैसा बीता।

गहरी नींद लीजिये : आप अच्छी नींद लीजिये। रात को सोते समय नकारात्मक सोच मत रखिये, अपने झंझटों को अपनी नींद से दूर रखिये। तनाव पैदा करने वाली स्थितियों से और ऐसे लोगों से अपने आप को दूर रखिये। यदि आपने कहीं गलती की है तो उसे बिना झिझक स्वीकार कीजिये और माफी मांग लीजिये। इससे आप अपने आप को हल्का महसूस करेंगे। सदैव उन लोगों का साथ रखिये जो आपको पसंद करते हैं या जिन्हें आप पसन्द करते हैं।

आगे की जिंदगी की प्लानिंग कीजिये : आपको अभी अनेक वर्ष जीवित रहना है और इसी को ध्यान में रखते हुए आप अपना अगला लक्ष्य निर्धारित करिये, चाहे वह किसी भी क्षेत्र में हो-यह आपकी शिक्षा, आपकी योग्यता या आपके स्वास्थ्य सम्बंध में किसी में भी हो सकती है। बिना लक्ष्य के जिंदगी दिशाहीन हो जाती है। चाहे आपने कितने ही पैसे कमा लिये हों, चाहे आपने दुनिया की सारी सुख सुविधाएं जुटा ली हों, परन्तु यदि आपने अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं किया है तो आप सदैव असंतुष्ट ही रहेंगे। यदि आपने एक लक्ष्य प्राप्त कर लिया हो तो अपने दूसरे लक्ष्य की ओर बढ़िये और इस तरह आगे बढ़ते रहिये। इसी से आपको संतुष्टि मिलेगी।

अंतर आत्मा की आवाज सुनिये : आप अपने आप पर और अपने निर्णयों पर विश्वास रखिये। जो आपकी अंतर आत्मा कहे उसके अनुसार निर्णय लीजिये। तर्क और अंतर आत्मा में से अंतर आत्मा जो कहे उस पर विश्वास करें, क्योंकि अंतर आत्मा के मूल्यों और सिद्धांतों में सदैव सच्चाई रहती है।

आप अपने मनुष्य जीवन को भरपूर जियें : आपने मनुष्य जीवन पाया है, यह आपका सौभाग्य है, इसका भरपूर उपयोग करें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। योग और प्रणायाम आपकी दिनचर्या का हिस्सा बने। एक-एक क्षण का सदुपयोग करें। जीवन के मूल्यों को साकार करने का यह सुनहरा अवसर है। आपका मनुष्य जीवन सार्थक हो जायेगा।

विपरीत परिस्थितियों को स्वीकार करें : जीवन के उतार-चढ़ाव पर विचलित मत होइये। उतार-चढ़ाव प्रकृति के नियम हैं। यदि आप उन्नति के शिखर पर पहुंच गये हैं, तो उत्तेजित मत होइये और यदि आपकी किसी कारण अवनति हो गई है, तो भी विचलित मत होइये। यदि आपका आर्थिक या सामाजिक परिवर्तन हो गया है, तो भी आत्म सम्मान के साथ जो भी स्थिति बनती है, उसे स्वीकार करिये। यदि आप बहुत बड़े आदमी बन गये हैं तो अभिमान से दूर रहिये और यदि आप निम्न वर्ग के हों तो भी निराशा और ग्लानि को अपने आप से दूर रखिये। परिवार में सामंजस्य बनाये रखें। अगली पीढी की आलोचना नहीं करें, बल्कि उनके साथ घुल-मिल जावें। तभी आपको परिवार में मान-सम्मान मिल जायेगा।

बागवानी में समय लगायें : यदि आपके घर में बगीचा हो या आपकी कालोनी में गार्डन है, तो कुछ समय बागवानी में लगावें। आप चाहें तो अपने घर में भी गमलों में पौधे लगा सकते हैं। इससे जहां एक ओर आप स्वस्थ रहेंगे तो दूसरी ओर आप प्रसन्न चित रहेंगे।

लोगों की सहायता करें : यदि आपने अपने रिटायरमेंट के कारण पैसे जमा कर रखे थे, तो कुछ सहायता जरूरतमंदों की जरूर करें। आप अपने पास के वृद्ध आश्रम या अनाथाश्रम में भी सहयोगी बन सकते हैं। आप चाहें तो अपने हम उम्र लोगों का एक ग्रुप बना कर लोगों की अच्छी सहायता कर सकते हैं।

देश-विदेश का भ्रमण करें : आप अपने जीवन साथी के साथ या अकेले या किसी ग्रुप के साथ जैसी भी आपकी स्थिति हो, यात्रा का प्रोग्राम बना सकते हैं। सामान्यतया परिवार का आपको सहयोग मिलेगा। आप चाहें तो तीर्थ यात्रा कर सकते हैं या ऐतिहासिक या रमणीक स्थलों का भ्रमण कर सकते हैं।

जीवन साथी के साथ समय बितावें : प्यार करने की कोई समय या सीमा नहीं होती। व्यापार या नौकरी के कारण या तो परिवार की परिवरिश के कारण आप अब तक समय नहीं निकाल पाये हों तो अब देरी किस बात की। लग जाइये अपने जीवन साथी को खुश करने में। आपको इतना आनंद आयेगा जिसकी आपने कभी कल्पना तक नहीं की होगी।

दोस्तों के साथ समय बितायें : प्रातःकाल और सायंकाल गार्डन में भ्रमण करें और नये-नये दोस्त बनावें। उनके साथ सिनेमा देखें, गप-शप करें, दुःख-सुख की बातें करें, जिससे आपका मन हल्का रहेगा। कभी-कभी पागलपन और सेक्स की बातें करें। कल्पनाओं की उड़ान भरें। एक फिल्म का यह गाना कितना सार्थक है-

मुड़मुड़ के न देख मुड़मुड़ के
जिंदगानी के सफर में तू अकेला ही नहीं है हम भी तेरे हम सफर हैं।

जीवन संध्या की कटु सच्चाई
शासन नहीं समझौता

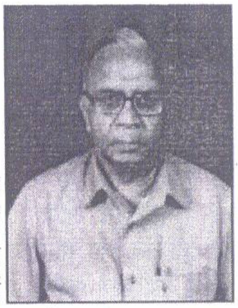

-ओम लडिया

सूरज न बदला, चाँद न बदला, न बदला आसमान।
कितना बदल गया इंसान, कैसा हो गया परिवार।

आदि का अंत, उदय का अस्त, सुबह-शाम, दिन-रात, प्रकाश-अंधकार, जितने सच्चे हैं उतना ही सच है मानव जीवन का जन्म और मरण। इसका कोई अपवाद नहीं है। अवसान के पूर्व हमारे जीवन में एक ऐसा पड़ाव आता है जिससे सभी को गुजरना पड़ता है, इस स्थिति को बुढ़ापा या वृद्धावस्था कहते हैं। हमारे संस्कारों के तहत यह 'जीवन संध्या' एक गौरवमय, सम्मानजनक, सत्कारपूर्ण स्थिति मानी जाती थी। वृद्धव्यक्ति संयुक्त परिवार का मुखिया, परिवार के सभी आयोजन में अहम् भूमिका रखता था। यह कोरी कल्पना नहीं, स्वप्न नहीं एक हकीकत थी और कुछ ही वर्षों पहले तक हमारे बुजुर्ग जीवन के इस स्वर्णिम काल का सुखद अनुभव भोगते थे। अह्लादवश वे अहा...अहा कह कर उल्लासित होते थे।

जिन्दगी की मशीनी रफ्तार के साथ सब कुछ बदल रहा है। इंसानी रिश्तों पर बदलते समय का दबाव इस तरह पड़ा है कि अत्यंत निकट के रिश्तों में भी सिर्फ औपचारिकता रह गयी है। यह संबंध चाहे माँ-बाप-बेटे के बीच का हो, सास-ससुर-बहू के बीच का हो या भाई-बहन, चाचा-भुआ का। अब प्रेम-भाव और आत्मीयता लुप्त होती जा रही है। इन सबके लिये जिम्मेदार है अपने स्वार्थ तक सिमट कर रह जाने वाली भौतिकतावादी सोच। स्वार्थमय सबको बनाया है यहाँ कर्तार ने।

घर अब एक मंदिर न रहकर सिर्फ एपार्टमेंट में तब्दील हो गया है। इन सबका सबसे बड़ा खामियाजा अगर कोई भुगत रहा है तो वह है वृद्धावस्था को झेल रहे गरीब मां-बाप जो असहाय हैं, पराश्रित हैं।

वे मां-बाप जो पुत्र के जन्म पर खुशियों से झूम उठते हैं उनके बचपन को हर संभव खुशी देने का प्रयास करते हैं, जो उन्हें पालने-पोसने, पढ़ाने-लिखाने (उनका भविष्य बनाने) में अपनी सारी शक्ति, अपनी अर्जित सम्पत्ति को खर्च कर डालते हैं, वे अपने वृद्ध और अशक्त होने पर अपनी संतान के उपेक्षा भाव से किस कदर मर्माहत होते हैं इसका अंदाजा उन संतानों को नहीं हो पाता जो निजी स्वार्थ तथा उच्च शिक्षा के अहंकारवश अपने मां-बाप से मुँह फेर लेते हैं।

हम ऐसे कुल किताबें काबिले-जब्ती समझते हैं।
जिनको पढ़के बच्चे-बाप को खब्ती समझते हैं।।

समय की मांग है कि हताशा और निराशा झेल रहे ये लोग अपने आपको परिस्थितियों के हवाले न करके इसके निदान की चेष्टा करें। साठी को लाठी न मानकर अपने आपको 70-+वर्ष की आयु तक सक्रिय समझें। जीवन के अंतिम पड़ाव को भी एक संघर्ष मानकर, धीरज और विश्वास के साथ वैसा ही उत्साह रखना होगा जैसे यथा पूर्व जीवन में था। वृद्धावस्था एक थकान तो हो सकती है पर कोई अभिशाप नहीं। 'हम थे जिनके सहारे वे हुए न हमारे' को याद करके जीवन को दुःखमय न बनायें। अपने प्रति उदासीनता का भाय त्याग कर मानसिक रूप से स्वयं को दृढ़ बनाना होगा। जीवन को जीने की ललक से भरना होगा तभी पुनः नई ऊर्जा का संचार संभव है।

पुत्र की अभिलाषा, बन जाती अभिशाप।
अपने ही जब, बेगाने बन जाते हैं।।

जो लोग अपने माता-पिता के साथ निर्ममता का व्यवहार करते हैं, ताड़ना देते हैं, अपमानित करते हैं, नीचा दिखाते हैं, वह यह भूल जाते हैं कि एक दिन वे भी वृद्ध होंगे और आने वाले कल में उनके अपने बेटे भी वैसा ही व्यवहार उनके साथ करेंगे। वक्त ने कभी उनको माफ नहीं किया, जो बुजुर्गों की भावना से दिल्लगी करते हैं।

कुछ लोग वृद्ध माता-पिता या घर-परिवार में बड़े बुजुर्ग को बोझ समझते हैं, उनका ऐसा सोचना गलत है। दुःख, मुसीबत के क्षणों एवं पारिवारिक तनाव के समय इनकी उपस्थिति एक सहारे की तरह होती है। सर पर एक साये की तरह उनके होने का अहसास राहत देता है। ऐसे एकल परिवार जिनमें पति-पत्नी दोनों ही नौकरी पेशा या कामकाजी हो, बुजुर्ग की उपस्थिति एक महती जरूरत है। घर की देखभाल, आये-गये का ख्याल के साथ-साथ, छोटे बच्चों को जो स्नेह प्यार-दुलार इनसे मिल सकता है वह परिचारिका या दाई, नौकरों से मिल पाना कहाँ संभव है। बच्चों के मानसिक विकास और उनकी आदतों पर बाल्यकाल के परिवेश का गहरा प्रभाव पड़ता है, यह ध्यान में रखने योग्य है।

खुले स्थानों, मैदान या पार्क में आपको अक्सर लगभग समान आयु वाले 65-75 वर्षीय 'जीवन संध्या' को झेल रहे वृद्ध/वयोवृद्ध महिला-पुरुष (जो सामान्य व कमजोर वर्ग के होते हैं) का दल दिखाई पड़ जायेगा जो आपस में मिल-बैठ कर अपना दुखड़ा एक-दूसरे को सुनाते हैं। बेटे-बहू की करनी का रोना-धोना करके अपने मन का बोझ हल्का करते हैं और दिन ढलते-ढलते फिर उसी घर को वापस हो लेते हैं।

हमने भी गला घोटा था, अपने अरमानों का।
वहीं अरमान आज, आँसू बनकर बहते हैं।।

इन सबका प्रत्युत्तर सहनशीलता, संवेदनशीलता, सहयोग, स्नेह, प्यार ही हो सकता है। ऐसे बुजुर्गों (महिला/पुरुष) को शारीरिक क्षमतानुसार घर-परिवार के कार्यों में जहां तक संभव हो सके हाथ बंटाना चाहिये। जैसे हल्के-फुल्के बाजार कर लाना, तरकारी-सब्जी छीलना-काटना, बच्चों को स्कूल या स्कूल वाहन तक पहुँचाना-वापस लाना, टेलीफोन-बिजली बिल जमा करना आदि। ऐसा करने से आपकी भूमिका.एक सहयोगी की तरह मानी जायेगी।

एक और बात जिसकी ओर ध्यान दिया जाना जरूरी है वह ये कि वर्तमान को देखते हुए निकट भविष्य में पूरी तरह बच्चों पर आश्रित हो जाना भी उचित नहीं। बच्चों के भविष्य में ही हमारा भविष्य है यह सिर्फ कहावत बन कर रह गयीं है और आज इसका कोई औचित्य नहीं है। अपनी छोटी-छोटी जरूरतों के लिए औलाद का मुंहताज होना बड़ा कष्टकारक होता है। यह बात अच्छी तरह मन में बिठा लें कि अपनी पूंजी के सिवा वृद्धावस्था में और कोई सहारा अपना नहीं है। थ्रोड़ी बहुत पूंजी होगी तो बेटे-बेटी स्वार्थवश ही सही आपकी देखभाल ठीक तरह से करेंगे। स्नेहवश पूंजी का अधिकार उनको दे दिया तो दुर्दिन की नौबत आ सकती है।

जरूरत इस बात की है कि बेटे भी माँ-बाप के प्रति अपने कर्त्तव्य और नैतिक दायित्व को समझें, उन्हें मान-सम्मान दें। मां-बाप का भी यह कर्त्तव्य बनता है कि अपनी 'जीवन संध्या' में, समय के यथार्थ को समझें, बेटे-बहू के प्रति शासन की नहीं, अपितु मित्रवत-स्नेहमय व्यवहार को स्थान दें। आधुनिक जीवन की यही एक कटु सच्चाई है।

तूँ आप ही अपना, मांझी बन,
मौजों (लहरों) के सहारे बहना क्या।

वृद्धाश्रम : हालांकि यह बिडम्बना ही है कि लगातार बढ़ते साधुओं की फेहरिश्त में जो नाम और चेहरे सामने आ रहे हैं वे भी अपनी वाणी से कुछ ऐसा नहीं कहते जो युवा पीढ़ी में वृद्धों के प्रति प्यार, स्नेह, दयाभाव जाग्रत कर सके। बडे-बड़े धर्मगुरू, जो बड़े-बड़े मठ, आश्रम चलाते हैं उन्हें वृद्धाश्रम-व्यवस्था भी करनी चाहिये। ऐसे लोग जो शारीरिक रूप से अशक्त हैं, अपाहिज हैं, वयोवृद्ध हैं, अपनी दैनिक जीवन की जरूरतें पूरी करने में असमर्थ हैं उन्हें अपने आश्रम में आश्रय दें। उनकी देखभाल करें और साथ-साथ यथावत उनकी सेवा तथा अनुभव का लाभ भी उठायें। कर्म के साथ यह इनका धर्म भी बनता है। इन दिनों जबकि सांसारिक गृहस्थ अपने ही घर-परिवार के वृद्ध सदस्यों की ठीक से देखभाल नहीं करना चाहते हैं तो व वृद्धाश्रम में पराये वृद्धजनों की क्या सेवा करेंगे।

सेवा संस्थाएं डे केयर सेंटर की स्थापना कर सकती हैं जहाँ वृद्धजन अपना दिन का समय व्यतीत कर सकते हैं। यदि आप वास्तव में वृद्धजनों की सेवा करना चाहते हैं तो उसके कई रास्ते हैं। ये वृद्धजन आपके परिवार या पड़ोस के सदस्य भी हो सकते हैं, और आप जिस जगह रहते हैं उस बस्ती, कालोनी या कॉम्प्लेक्स में हो सकते हैं। इनकी सेवा के लिए आप अपना कुछ समय इनके साथ बिताये, इनसे बातें करें, इनकी बातें सुने, इनके खानपान की व्यवस्था, कभी-कभी इन्हें साथ लेकर घूमना-फिरना, इन्हें स्नेह और सम्मान दें। समय-समय पर नियमित रुप से सभी वृद्धजनों को लेकर मिलन गोष्ठी का आयोजन करें। वृद्ध-दिवस मनायें, फिल्म दिखाना आदि जैसे कार्य करें। ऐसा करने से इनको आत्मिक सुख व शांति मिलेगी।

आप राह चलते हुए भी वृद्धजनों की सहायता कर सकते हैं। उन्हें रास्ता पार कराना, उन्हें उनके गंतव्य तक पहुंचाने में मदद करना, उन्हें अस्पताल पहुंचाना, भीड़-भाड़ वाले रास्तों में यदि वे फंस गये हैं तो उन्हें सहारा देकर आगे बढ़ने में मदद करना, सीढ़ी उतरते और चढ़ते समय वृद्ध व्यक्ति के प्रति हाथ बढ़ाना, बस में सफर करते समय वृद्ध व्यक्ति को अपनी सीट प्रदान करना, गाड़ी चलाते समय उनको पार करने में प्राथमिकता देकर, उनकी सेवा कर सकते हैं और आत्मिक आनन्द भी प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे व्यक्ति जिन्हें बचपन से ही माँ-बाप का प्यार नहीं मिला और उन्हें मां-बाप की कमी खलती हो तो किसी वयोवृद्ध को मां-बाप के रूप में adopt कर सकते हैं। अपवाद स्वरूप विवाहिता पुत्री को भी माता-पिता की देखरेख करने का दायित्व बनता है और उनको गुजाराभत्ता देने का कर्त्तव्य भी।

वृद्ध माता-पिता के प्रति पुत्रों के निर्मम व्यवहार के कई मामले प्रकाश में आये जिनको घर से निकाल दिया या उनके भरण-पोषण से किनारा कर लिया गया। मैं कानून संबंधी चर्चा नहीं करना चाहता, यद्यपि कानून में वृद्ध के सहायतार्थ कुछ प्रावधान उपलब्ध हैं। इस परिस्थिति में किसी कानून विशेषज्ञ की राय ली जा सकती है।

जरूरत इस बात की है कि बेटे भी माँ-बाप के प्रति अपने कर्त्तव्य और नैतिक दायित्व को समझें, उन्हें मान-सम्मान दें। मां-बाप का भी यह कर्त्तव्य बनता है कि अपनी 'जीवन संध्या' में, समय के यथार्थ को समझें, बेटे-बहू के प्रति शासन की नहीं, अपितु मित्रवत-स्नेहमय व्यवहार को स्थान दें। आधुनिक जीवन की यही एक कटु सच्चाई है।

'अहा' जब बदल जाती है 'आह' में
धूमिल हो जाती है, जीवन संध्या।
क्या इसी का नाम जिन्दगानी है।

सम्मेलन के नये संरक्षक सदस्य का स्वागत

संरक्षक सदस्य संख्या-147
नाम : ए एस ओ सिमेन्ट लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री संदीप अग्रवाल
कार्यालय का पता :
39, शम्भूनाथ पंडित स्ट्रीट, कोलकाता-700 025
दूरभाष : 033-2223 6529, फैक्स : 033-2223 1321
मोबाईल नं.- 098312 02549
ई-मेल : sandeep@navyuggroup.com
निवास का पता : 10, अलीपुर पार्क रोड, कोलकाता-700 029

सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : श्री विष्णु कुमार तुलस्यान
कार्यालय का पता :
पी-2, न्यू सी.आई.टी. रोड
आराधना बिल्डिंग, दो तल्ला
कमरा नं. 210, कोलकाता-73
मोबाईल नं.- 098310 54180

नाम : श्री संदीप मुरारका
कार्यालय का पता :
बालाजी फ्लाई एश प्राइवेट लि.
मारवाड़ी पारा रोड, जुगसलाई
जमशेदपुर - 831006
मोबाईल नं.- 094311 17507

नाम : श्री निर्मल कुमार काबरा
कार्यालय का पता :
साउथ बिहार प्लास्टिक प्रा. लि.
चौक बाजार, पो. जुगसलाई
जमशेदपुर-831006
मोबाईल नं.- 093348 00505

नाम : श्री द्वारका प्रसाद मित्तल
कार्यालय का पता :
डी.पी. मित्तल एण्ड एसोसिएट्स
पहला तल्ला, एफएफबी-03,
बसंत टाकीज कॉम्पलेक्स
पो. साक्षी, जमशेदपुर-831001
मोबाईल नं.- 093348 14643

नाम : श्री सुभाष चन्द्र मुनका
कार्यालय का पता :
जी3 एवं जी4, बीरेन द्वारका पैलेस
143, आमबागान रोड
पो. साकची, जमशेदपुर-831001
पूर्वी सिंहभूम, झारखण्ड
मोबाईल नं.- 092346 10242

नाम : श्री अजीत कुमार साहेवाल
निवास का पता :
207, महर्षि देवेन्द्र रोड
तीसरा तल्ला, कमरा नं. 63
पोस्ता पेट्रोल पम्प के पास
कोलकाता-700007
मोबाईल नं.- 090070 12826

नाम : श्री नरेन्द्र कुमार रूईया
कार्यालय का पता :
रूईया ट्रेडिंग कम्पनी
74/1, कॉटन स्ट्रीट, पहला तल्ला
कोलकाता-700007
मोबाईल नं.- 098300 91893

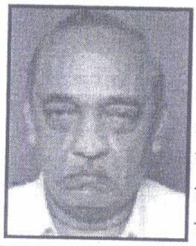

नाम : श्री सज्जन कुमार अग्रवाल
निवास का पता :
आटोमेटिक टेन्ट मैन्युफैक्चरिंग कं.
4, सिनागॉग स्ट्रीट, दो तल्ला
कमरा नं. 203
कोलकाता-700 001
मोबाईल : 098302 41341

सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : श्री संजीव कानोड़िया
निवास का पता :
32क्यू, न्यू रोड, अलीपुर
कोलकाता-700 027

नाम : श्रीमती मनीषा लोहिया
निवास का पता :
फ्लैट नं. -21, वृन्दावन इनक्लेव
4 तल्ला, 400 लायड्स रोड
गोपालपुरम, चैन्नई-600 086
मोबाईल : 098400 61926

नाम : श्री अर्चित झुनझुनवाला
निवास का पता :
7ए, शार्ट स्ट्रीट
कोलकाता-700 027
मोबाईल : 093312 90654

नाम : श्री पी. लोहिया
निवास का पता :
फ्लैट नं. -21, वृन्दावन इनक्लेव
4 तल्ला, 400 लायड्स रोड
गोपलापुरम, चैन्नई-600 086
मोबाईल : 098410 24781

नाम : अलसीसर गौशाला एण्ड जनकल्याण ट्रस्ट
कार्यालय का पता :
मार्फत : श्री श्याम इन्टरप्राईजेज
2, दिगम्बर जैन टेम्पल रोड
कोलकाता-700007
मोबाईल नं.- 093310 30318

नाम : श्री मुकुन्द राज कानोड़िया
निवास का पता :
32क्यू, न्यू रोड, अलीपुर
कोलकाता-700 027

सम्मेलन के नये विशिष्ट सदस्यों का स्वागत

नाम : डॉ. दिनेश कुमार शर्मा
कार्यालय का पता :
श्री आदित्य आयुर्वेदा
2, काली कृष्ण टैगोर स्ट्रीट
कोलकाता-700007
मोबाईल नं.- 098316 25191

कविता

पेड़

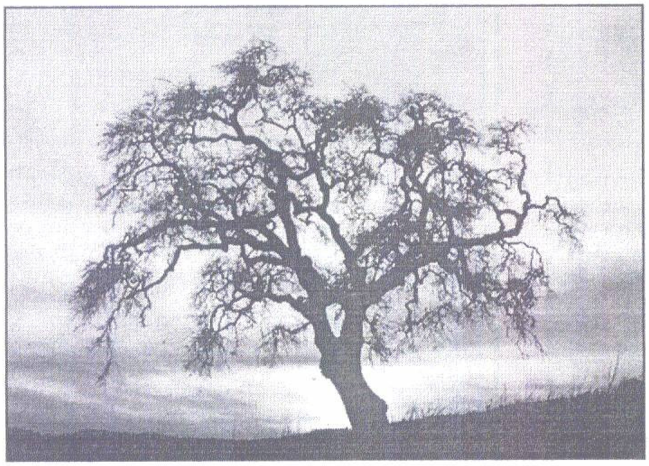

पेड़ उदास से खड़े हैं
निचाट सुनसान में
सूखे पत्तों के जंगल में
हवाओं के विरुद्ध
पेड़ देखते हैं
झुककर अपना चेहरा
और पेड़ों की जीभ पर
फैल जाता है
पिछले बसंत का स्वाद।

-कुमार शर्मा अनिल
1192बी, सेक्टर 41बी
चंडीगढ़-160036

बंगाल की राजनीति में हाशिए पर हिन्दी भाषी

– संजय हरलालका

बंगाल में प्रायः सभी प्रमुख राजनैतिक पार्टियों ने राजनीति में हिन्दी भाषियों को हाशिये पर धकेल दिया है वहीं हिन्दी भाषी भी आज तक चुपचाप बैठकर तमाशा देखते रहे और इसके खिलाफ कोई आवाज न उठाकर अपने पांव पर कुल्हाड़ी मारी है। कहते हैं कि 'रोये बिना तो माँ भी दूध नहीं पिलाती' तो फिर ये पार्टियां बिना कुछ मांगे कैसे किसी को कुछ दे सकती हैं। पूरे देश में महिलाओं, अल्पसंख्यकों, आदिवासियों, पिछड़ों, जाटों और न जाने कितनों के आरक्षण की मांग बारम्बार उठती रही है, आंदोलन होते रहे हैं और इसमें सफलता भी उन्हें मिली है किन्तु हिन्दी भाषियों ने आज तक ऐसी कोई मांग नहीं रखी। राज्य में हिन्दी भाषियों की एक और कमजोरी है कि वे कभी वोट बैंक में तब्दील नहीं हुए। बल्कि यह कहने में भी कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि राज्य में हिन्दी भाषियों के एक वर्ग ने तो अब तक मतदान के अपने अधिकार को भी समझने की चेष्टा नहीं की और इसी का प्रतिफलन है कि अहिन्दी भाषी प्रदेश बंगाल में हिन्दी भाषियों को आज अपनी राजनैतिक जमीन तलाशनी पड़ रही है। उन्हें ये राजनैतिक पार्टियां दोयम दर्जे का समझने लगी हैं। जिस तरह भाषा, संस्कृति एवं पहनावे से हमारी पहचान बनती है उसी तरह राजनीति में सक्रिय भागीदारिता से हम सरकार एवं सरकारी महकमों तक अपनी बातों को पहुँचाने में सफल होते हैं। राज्य का कोई भी चुनाव हो, हिन्दी वासियों का वोट लेने हेतु ये पार्टियां गोलबन्द हो जाती हैं, उनका समर्थन पाने हेतु गैर राजनैतिक मंचों का इस्तेमाल होता है। उनकी सुख-सुविधाओं हेतु बड़े-बड़े वादे किये जाते हैं किन्तु क्या कभी हमनें इससे उपर उठकर व्यापक दृष्टिकोण की भावना के मद्देनजर इन पार्टियों व नेताओं से राजनैतिक भागीदारी की मांग की? राज्य में हिन्दी भाषियों की इस राजनैतिक दुदर्शा के लिए कहीं न कहीं हिन्दी भाषी भी दोषी हैं?

लेकिन अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है। कहते हैं कि 'जब जागो तभी सबेरा।' तो अब समय आ गया है जागने और जगाने का। हमें ऐसी दिशा तय करनी चाहिए कि राजनैतिक पार्टियां हमारे बारे में सोचने के लिए बाध्य हों। हम राज्य की राजनीति में सक्रिय भागीदारी निभाते हुए राज्य का विकास चाहते हैं। अगर अभी भी हम नहीं चेते तो आने वाला समय कभी हमें माफ नहीं करेगा और हम अपनी जमीन तलाशते ही रह जायेंगे।

राजस्थानी कविता

मारवाड़ी पत्नी रो फौजी पति स्यूं निवेदन

–जगदीश प्रसाद पाटोदिया

धरबादद्दो बंदूख कांध पै साथै चालूंगी,
थारी रक्षा खातिर आगै घेरो घालूंगी,
क बेटी मारवाड़ री हूं।

बेटी मारवाड़ री हूँ भोभली माटी री कोनी,
चूंध्यो है दूंध सिंघणी रो, कालजो डरपणियो कोनी।
बेटी मारवाड़ री हूं, काल़जो कांपणियो कोनी,
कल़सां काची है तो के, चूड़ियां कांचा री कोनी।
दिखा द्यूंगी चण्डी रो रूप,
रूण्ड रो ढेर लगा द्यूंगी,
दुश्मणा री चिण चिण हास नयो आम्मेर बणा दूंगी।
बेटी मारवाड़ री हूं, मांडणा मुण्डा स्यूं भरस्यूं,

म्हैंदी नहीं मंडास्यूं आज, आंजल़ा लोही स्यूं भरस्यूं।
घूंघटो खोलणद्दोमत भल्यां, घूंघटो लाज शर्म रो है।
पैंजणी पग मं रहबाद्दो, छमाछम बिछियां री होसी,
घूघरा आपै बंध जासी, छमाछम गोल्यां री होसी।
आल़तो पधां रचाकैजी, पलीता तोपां बीच भर द्यूं।
बिज़ली बण-बण छा जाऊं,
जोर रो घटाटोप कर द्यूं।
मौत रो नांव मतां लीज्यो,
मौत के म्हारी सोकण है?
नहीं जे पट मेली कर द्यूं, पियाजी थारी सोगण है।
पाणी मारवाड़ रो पियो, बाजरै रो पण मन सं है।
पियाजी काची मत जाणो, मारवाड़ण री जाई हूँ,
पागड़ी केशरिया थारै, (तो) चून्दड़ी लाल रंगाई हूं।
क बेटी मारवाड़ री हूं।

दो लाइनों में क्या कुछ कह डाला; आप भी गुनगुनाइये

यदि चुनाव का अर्थ न होता, धोखा-नफरत-भ्रष्टाचार
तो होता संसद में हर नेता, कर्मठ-सच्चा और ईमानदार

क्रांति नहीं कर सकता है जो होता सुविधा भोगी
क्रांति सदा करने वाला है परम वीर कर्म योगी

●

अब जो सिर पर आ पड़े नहीं डरना है
जन्में हैं, दो बार नहीं मरना है

●

जहां भी जायेगा रोशनी लुटायेगा
किसी चिराग का अपना मकान नहीं होता

●

वर्तमान की प्रगति पर देता नहीं कुछ ध्यान
निन्दा जिसका लक्ष्य हो, अन्धा उसको जान

●

जमाने में उसने बड़ी बात कर ली
खुद अपने से जिसने मुलाकात कर ली

●

जब तलक था साथ उनके, आदमी था काम का
साथ छोड़ा और मैं बिलकुल निकम्मा हो गया

●

कम मत समझो इन्हें, ये हैं शकुनी के मामा
शांति नहीं, इनको प्रिय लगता है हंगामा

●

जन सेवा की ढोलकी पीटो सुबहो शाम
कितने भी बदनाम हो, हो जाओ सरनाम

●

खतरा ये नहीं कि सच कोई नहीं कहता
खतरा ये है कि सच सुनने वाले पाये नहीं जाते

●

उनकी तरह से हमको, बदलना नहीं आता
हर रुप और रंग में ढलना नहीं आता

●

कांटे ही किया करते हैं फूलों की हिफाजत
फूलों को बचाने कोई माली नहीं आता

●

तुम चाहोगे अगर चाहने वालों की तरह
हम संवर जायेंगे बिखरे हुये बालों की तरह

●

कई मर्तबा दिल पे बिजली गिरी है
मगर मुस्कराने को जी चाहता है

●

कील गड़े जब पैर में, दर्द नहीं सुहाय
वैसे ही खल जन चुभे, उनसे सब घबड़ाय

●

कलियुग में पैसा प्रमुख, पैसे का संसार
पैसा हो यदि पर्स में, भागा आये प्यार

●

तू भी फलों का दावेदार निकल आया
बेटा, पहले बाग लगाना पड़ता है

●

मुसीबत में भी शरीफों की शराफत कम नहीं होती
सोने टुकड़े क्यूं न हो जाए पर कीमत कम नहीं होती

●

मिलते रहे रुलानें वाले, हम बन गये हंसाने वाले
मन से निर्मल हो ना पाये, गंगा रोज नहाने वाले

●

कौन है ऐसा सफर, मंजिल जिसे मिलती नहीं
ये अलग सी बात है कुछ दूर चलकर सो गए

●

अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।

●

परिचय

समाज रत्न बसंतलाल मुरारका

-पूनम चन्द रतेरिया

(गतांक से आगे)

सन् 1920 में कलकत्ता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन बुलाया गया जिसमें महात्मा गांधी ने असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव रखा। इस कांग्रेस अधिवेशन में भी बसंतलाल जी ने सक्रिय भाग लिया। उसी वर्ष नवम्बर में नागपुर में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसमें असहयोग के प्रस्ताव पर विशेष रुप से विचार होना था। बड़ाबाजार की ओर से बसंत लालजी अपने सहयोगियों के साथ उस अधिवेशन में गये और बंगाल के नेता देशबंधु दास के विरुद्ध उन्होंने महात्मा गांधी का तगड़ा समर्थन किया। असहयोग आन्दोलन में हजारों आदमी जेल गये इसलिए जेल का जो आतंक जनसाधारण के ह्दय में छाया हुआ था वह समाप्त हो गया। बाद में श्री देशबंधु चित्तरंजन दास महात्मा गांधी जी की नीति से सहमत हो गये फलस्वरुप इस आन्दोलन में श्री बसंत लालजी ने उनके सात मिलकर खूब काम किया।

17 नवंबर सन् 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स के सम्मान के बहिष्कार के लिये सारे देश में एक हड़ताल मनायी गयी। बड़ाबाजार में हड़ताल को सफल बनाने में श्री बसंतलालजी ने बड़ी कोशिश की। फलस्वरुप वह हड़ताल इतनी सफल हुई कि जिसकी आज तक कोई मिसाल नहीं है। प्रिंस ऑफ वेल्स का यह स्वागत-बहिष्कार देखकर अंग्रेज शासकों ने 10 दिसंबर 1921 को देशबंधु चित्तरंजन दास, मौलाना अबुल कलाम आजाद तथा सुभाष चन्द्र बोस के साथ श्री बसंतलाल जी मुरारका को भी प्रेसिडेंसी जेल भेज दिया। उन पर जब मुकदमा चला तब उन्होंने बड़ा ओजस्वी और निर्भीक बयान अदालत में दिया जिसके कारण उन्हें डेढ़ वर्ष का सश्रम कारावास दंड मिला। शायद मारवाड़ी समाज में देश के लिए जेल जाने का यह पहला उदाहरण था जो बसंतलाल जी ने उपस्थित किया था।

महात्मा गांधी जी के ऐलान पर कि जो जेल गये हैं वे यदि न रहना चाहें तो सरकार से अनुरोध करके बाहर आ सकते हैं, पर बसंतलाल जी ने ऐसा नहीं किया। जेल के अधिकारियों के क्रूर व्यवहार तथा यातनामय जीवन के बावजूद भी आन्दोलन को चलाये रखने के लिये वे अपने आनंदी स्वभाव को लेकर सुख-दुख की परवाह किये बिना जेल की अवधि पूरी करते रहे।

उस समय सारे देश में उत्तेजना फैली हुई थी और खलबली मची हुई थी। असहयोग आन्दोलन चल रहा था। बसंतलाल जी लगातार महात्मा गांधी के पक्ष का समर्थन किये जा रहे थे। चारों ओर सन्नाटा-सा छाया था। अंग्रेज सरकार के लिये यह एक नया मोर्चा था। इस प्रकार के आन्दोलन का उसे कोई अनुभव नहीं था। फलस्वरुप फिर एक बार श्री बसंतलाल जी मुरारका को देशबंधु चित्तरंजन दास आदि नेताओं के साथ अलीपुर जेल भेज दिया गया।

इसी बीच सन् 1926 में पहले-पहल कलकत्ते में हिंदू-मुसलमानों का साम्प्रदायिक दंगा हुआ। उस समय भी बसंतलाल जी का सेवा कार्य बड़ा प्रशंसनीय हुआ था। देशबंधु चित्तरंजन दास की मृत्यु के पश्चात श्री जे.एम.सेनगुप्त तत्पश्चात् श्री सुभाष चन्द्र बोस बंगाल के नेता बने। इन दोनों महानुभाव के साथ बसंतलालजी का घनिष्ठ संबंध रहा।

1928 में जो कलकत्ता में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ वह बहुत महत्वपूर्ण था। उसमें पूर्ण स्वतंत्रता की चर्चा हुई थी। उसी अवसर पर सर्वदल सम्मेलन भी हुआ था। उन सबमें मुरारका जी ने बड़ा महत्वपूर्ण सहयोग दिया था। जयपुर राज्य के युवक सम्मेलन में तो उन्होंने यह कहकर - कोई परवाह नहीं है, चना-गुड़ खाकर भी हम लोगों को सम्मेलन को सफल करना है - वहां के युवकों की हिम्मत बढ़ाई थी।

एक वर्ष बाद लाहौर में कांग्रेस के अधिवेशन में पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। जनवरी को स्वतंत्रता दिवस मनाने का निश्चय किया गया। उस आयोजन को भी सफल बनाने के लिये श्री बसंतलाल जी ने बड़ा प्रयत्न किया। देश में एक नवजीवन की लहर दौड़ी। अब बंगाल में कानून अमान्य आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ। उसके लिये एक सिविल ऑबिडियेंस कमेटी की स्थापना हुई जिसके मंत्री श्री बसंतलाल जी निर्वाचित हुए। इधर गांधी इरविन पैक्ट की बात चल रही थी जिसके लिये बसंतलालजी मुरारका लगातार महात्मा गांधी और सुभाष चन्द्र बोस से मिलकर एक सक्रिय योगदान देते चले आ रहे थे।

सन् 1930 में नमक सत्याग्रह का आन्दोलन महात्मा गांधी ने छेड़ा। उस समय आईन अमान्य परिषद की स्थापना बड़ाबाजार में हुई। श्री बसंतलाल जी इस परिषद के मंत्री बनाए गए। इसके चलते वे फिर गिरफ्तार किये गये और जेल भेज दिये गये। राउंड टेबुल कान्फ्रेंस की असफलता के कारण सरकार ने महात्मा गांधी के साथ अन्य सक्रिय नेताओं में से

श्री बसंतलाल जी को भी गिरफ्तार कर लिया। वे दो महीने के लिये नजरबंद किये गये थे परंतु बाद में छूटते ही अवज्ञा के अपराध में फिर गिरफ्तार कर लिये गये। उनकी पत्नी अपने तीन बच्चों को लेकर दमदम जेल उनसे मिलने जाती थी। दमदम जेल शहर से तो बहुत दूर था ही, बस-स्टॉप से भी काफी दूर पड़ता था। राष्ट्रपिता द्वारा दिये गये मंत्र से दीक्षित होकर बसंतलाल जी अपनी ऊँची छाती लिए पुलिस की लाठियों और गोलियों की परवाह किए बिना और जेल की लौह श्रृंखलाओं का सामना करते हुए अपने संकल्प-पथ पर आगे बढ़ते जा रहे थे। वे सदा कहा करते थे – भाई आग की लपटें चींटी की गति से नहीं चला करतीं, वे सिंह के सदृश झपट्टा मार कर कुछ क्षणों में ही अपना काम पूरा कर देती हैं।

सन् 1934 में बिहार में जो भयंकर भूकम्प आया था उसमें अपनी पत्नी को प्रसव पीड़ा में छोड़कर वे भूकम्प पीड़ितों की सेवा में चले गये। वसुधेव कुटुम्बकम तो जैसे उनका जीवन सिद्धान्त था। वे एक निर्भीक व्यक्ति थे। सन् 1942 में विजगापट्टम में बमबारी के बावजूद भी पास में बलांगीर में उड़ीसा मारवाड़ी कार्यकर्ता सम्मेलन के अधिवेशन को उन्होंने सफलतापूर्वक सम्पन्न किया।

> *17 नवंबर सन् 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स के सम्मान के बहिष्कार के लिये सारे देश में एक हड़ताल मनायी गयी। बड़ाबाजार में हड़ताल को सफल बनाने में श्री बसंतलालजी ने बड़ी कोशिश की। फलस्वरुप वह हड़ताल इतनी सफल हुई कि जिसकी आज तक कोई मिसाल नहीं है। प्रिंस ऑफ वेल्स का यह स्वागत-बहिष्कार देखकर अंग्रेज शासकों ने 10 दिसंबर 1921 को देशबंधु चित्तरंजन दास, मौलाना अबुल कलाम आजाद तथा सुभाष चन्द्र बोस के साथ श्री बसंतलाल जी मुरारका को भी प्रेसिडेंसी जेल भेज दिया।*

उसी वर्ष अगस्त में बम्बई कांग्रेस की बैठक में अंग्रेजों भारत छोड़ो का प्रस्ताव पास हुआ। बसंतलालजी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य थे। बम्बई में भी वे उक्त बैठक में सम्मिलित होने गये। देश का राजनीतिक वातावरण उत्तेजना की चरम सीमा को पहुँचा हुआ था। इसलिये ज्यों ही यह प्रस्ताव पास हुआ बसंतलाल जी को बम्बई से लौटते ही हावड़ा स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिया गया और वे जेल भेज दिये गये। करेंगे या मरेंगे उस समय का नारा था। भयंकर प्रसव पीड़ा के बावजूद भी उनकी पत्नी उनसे हावड़ा स्टेशन मिलने पहुँची। पहले हावड़ा जेल और उसके बाद अलीपुर जेल में उन्हें रखा गया। 1944 के फरवरी महीने तक इन्हें कारावास झेलना पड़ा।

यह आन्दोलन पिछले सब आन्दोलनों से भिन्न था। देश भर में उत्पात मचा हुआ था। कहीं रेल की पटरियां तोड़ी जा रही थी, कहीं तार तोड़े जा रहे थे, कहीं डाकखाने जलाये जा रहे थे, कहीं थाने जलाये जा रहे थे – चारों ओर भयंकर उत्पात मचा था। सरकार की पुलिस, अधिकारी, सेना सब-की-सब आन्दोलन को दबाने में लगी हुई थी। सारे शहर में घोर सनसनी फैली हुई थी। उस समय लोग छिप-छिपकर भी आन्दोलन करते थे। 1945 में फिर बम्बई में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसमें बसंतलाल जी सम्मिलित हुए।

16 अगस्त 1946 को कलकत्ता में भयंकर मार-काट छिड़ गई। आदमी पशु और राक्षस से भी गया-बीता हो गया था। इस अवसर पर शांति स्थापना तथा दंगा-पीड़ितों की सहायता के कार्य में बसंतलालजी ने बड़ा काम किया। महात्मा गाँधी ने इस मौके पर आमरण अनशन की घोषणा की। इस अवसर पर बसंतलाल जी ने दोनों तरफ के नेताओं से मिलकर महात्माजी का अनशन भंग करवाने के लिये बड़ा प्रयत्न किया। उसी वर्ष विधान सभा का जो आम चुनाव हुआ उसमें बड़ाबाजार क्षेत्र से बसंतलाल जी कांग्रेस की ओर से निर्वाचित हुए।

1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ देश में फिर भयंकर उपद्रव हुए। इसमें अनेक परिवारों के जन-धन की अपार हानि हुई। बसंतलालजी ने मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की ओर से दिल्ली में विस्थापितों के आश्रय आदि के लिये यथासाध्य व्यवस्था की। बंगाल के विस्थापितों की समस्या को सुलझाने में भी उनका बड़ा योगदान रहा।

सन् 1952 के प्रथम निर्वाचन में बालिग मताधिकार के आधार पर, वीरभूम जो कि एक शुद्ध बांग्ला भाषी क्षेत्र था वहां से बसंतलालजी ने अपने मुकाबले के प्रभावशाली उम्मीदवार को हराया और निर्वाचित हुए। यद्यपि उनका जन्म राजस्थान में हुआ था पर बंगाल में निवास करने के कारण उन्होंने अपने को कभी बंगाली से भिन्न नहीं माना।

उन्होंने हिंदी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में भी काम किया। जब-जब वे जेल गये तब-तब जेल के अपने साथियों को हिंदी भाषा की शिक्षा देने का काम वे करते रहे। सुभाष बाबू को भी हिंदी सिखाने की उन्होंने समुचित व्यवस्था की। हिंदी के प्रचार के लिये हिंदी प्रचार सभा जो संस्था स्थापित की गई थी, उसके वे सभापति थे।

....

समस्त सृष्टि का नववर्ष–चैत्र शुक्ल प्रतिपदा

–निर्मल कुमार जालान, मुंगेर (बिहार)

1 जनवरी का दिन आते ही मोबाईल की घंटियां बजने लगती हैं और हैपी न्यू ईयर के बोल गूंजने लगते हैं एस.एम.एस. आने और जाने का सिलसिला शुरू हो जाता है। होटल एवं पार्कों में जश्न मनाने वालों का तांता लग जाता है। न्यू ईयर के इन्तजार में टी.वी. के माध्यम से भी लोग सारी रात जश्न मनाते रहते हैं और ऐसा लगता है कि जैसे सारी खुशियां एक साथ आज ही मिल जाएंगी। पर हमने कभी विचार नहीं किया कि क्या वास्तव में यह दिन हमारे खुशी मनाने का दिन है क्या? हम पश्चिमी सभ्यता में इतने सराबोर हो जाते हैं कि हम अपनी सारी संस्कृति को तिलांजलि देकर सही और गलत का बोध भी त्याग देते हैं। सच तो यह है कि जनवरी से प्रारम्भ होने वाली काल गणना का सम्बन्ध ईसाई जगत और ईसा मसीह से है जिसे रोम के सम्राट जुलियस सीजर द्वारा ईसा के जन्म के तीन वर्ष बाद प्रचलन में लाया गया था। भारत में ईश्वी संवत् का प्रचलन अंग्रेजी शासकों द्वारा 1752 में किया गया। अधिकांश राष्ट्रों के ईसाई होने एवं अंग्रेजों के विश्वव्यापी प्रभुत्व के कारण इसे विश्व के अनेक देशों ने अपनाया। 1752 के पहले सन् का प्रारम्भ 25 मार्च से होता था। ईस्वी कैलेंडर के महीनों के नाम भी या तो रोमन देवताओं के नाम पर या वहां के सम्राट के नाम पर हैं। बिना किसी आधार के समय–समय पर विभिन्न सम्राटों ने अपने–अपने हिसाब से इस काल गणना में फेर बदल किया और इसका ग्रहों एवं नक्षत्रों की स्थिति से कोई लेना–देना नहीं है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नवम्बर में एक पंचांग सुधार समिति की स्थापना की गई थी। समिति ने 1955 में सौंपी अपनी रिपोर्ट में विक्रमी संवत को भी स्वीकार करने की सिफारिश की थी। लेकिन हमारा दुर्भाग्य है कि तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू के आग्रह पर ग्रेगेरियन कैलेंडर को ही सरकारी कामकाज हेतु उपयुक्त मानकर 22 मार्च 1957 को इसे राष्ट्रीय कैलेंडर के रूप में स्वीकार कर लिया गया। जबकि इस कैलेंडर की काल गणना मात्र 2000 वर्षों के अति अल्प समय को दर्शाती है जबकि यूनान की काल गणना 3579 वर्ष, यहूदी 5767 वर्ष, पारसी की 198874 वर्ष तथा चीन की 96002304 वर्ष पुरानी है। इसके विपरीत हमारी काल गणना के अनुसार पृथ्वी की आयु 1973949109 वर्ष है जिसके प्रमाण ज्योतिष शास्त्रों में हैं तथा हमारे ग्रंथों में एक–एक पल की गणना का हिसाब है। इसके अलावा हमारी काल गणना पंथ निरपेक्ष है क्योंकि हमारी विक्रमी संवत् का सम्बन्ध किसी भी धर्म से न होकर सारे विश्व की प्रकृति, खगोल सिद्धांत और ब्रह्माण्ड के ग्रहों व नक्षत्रों पर आधारित है। इसलिए यह सृष्टि की रचना और राष्ट्र की गौरवशाली परंपराओं को दर्शाती है। इसका वर्णन हमारे पुरातन ग्रंथ वेदों में भी किया गया है। यही कारण है कि हम हर मांगलिक कार्य में चाहे बच्चे का जन्म हो, नामकरण हो, विवाह हो, गृह प्रवेश हो, या व्यापार प्रारम्भ करना हो, एक कुशल पंडित के पास जाकर शुभ मुहूर्त पूछते हैं। इतना ही नहीं देश के बड़े से बड़े राजनेता भी सत्तासीन होने के लिए एक अच्छे मुहूर्त का इन्तजार करते हैं। हमारी यह मान्यता है कि शुभ मुहूर्त में शुरू किया गया कार्य सफल होता है। चूंकि राष्ट्र के स्वाभिमान और देश प्रेम को जगाने वाले अनेक प्रसंग चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से जुड़े हुए हैं। इसलिए इस दिन को ही हमें नववर्ष के रूप में मनाना चाहिए। वास्तव में यह नववर्ष हम भारतीयों का ही नहीं बल्कि समस्त सृष्टि का नववर्ष है, क्योंकि इसी दिन ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचा की थी। प्रभु रामचन्द्र जी का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामजी का जन्मोत्सव नवरात्रि का प्रारम्भ इसी दिन से होता है। सम्राट विक्रमादित्य का क्रूर आक्रमणकारी शकों पर विजय का दिन भी यही शुभ दिवस है। वेदों के पुनरुद्धारक स्वामी दयानन्द, राष्ट्रीय स्वयंसवेक संघ के संस्थापक डा. हेडगेवार, सत्य एवं अहिंसा के अग्रदूत भगवान महावीर, वीर हनुमान, सिख परंपरा के द्वितीय गुरु अंगददेव, नामधारी कूका आन्दोलन के प्रवर्तक संत गुरू रामसिंहजी, वीर सेनानी तात्या टोपे, चाफेकर वंधु, खाल्सा सृजनकर्ता श्री गोविन्द सिंहजी, जालियावाला बाग के असंख्य अमर बलिदानी उधम सिंह सेनानी, नवरात्रों में पूज्य दुर्गा माँ, माँ काली, अन्नपूर्णा देवी, लक्ष्मी देवी, ज्ञानदायिनी माँ सरस्वती सहित अनेकों महापुरुषों का सम्बन्ध इस पावन दिवस के साथ है। इतना ही नहीं 5112 वर्ष पूर्व युद्धिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था। इसके अलावा इस दिन के कुछ प्राकृतिक महत्व भी हैं। जैसे वसंत ऋतु का आरम्भ वर्ष प्रतिपदा से ही होता है जो उल्लास, उमंग, खुशी और चारों तरफ पुष्पों की सुगंध से भरी होती है। फसल पकने का प्रारंभ यानि किसान की मेहनत का फल मिलने का भी यही समय होता है।

इस प्रकार भारतीय संवत्सर हमारे जीवन की गहराई से जुड़ा हुआ है और इस दिन किसी भी शुभ कार्य करने के लिए मुहूर्त निकालने की आवश्यकता नहीं रहती। फिर क्यों नहीं हम इस नववर्ष प्रतिपदा को श्रद्धा के साथ संकल्प लेकर मनावें।

दो दिवसीय राजस्थानी बाल साहित्य सम्मेलन सम्पन्न

श्रीडूंगरगढ़। राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति श्रीडूंगरगढ़ एवं राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में राजस्थानी बाल साहित्य पर केन्द्रित दो दिवसीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए अकादमी के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र खड़गावत ने बाल साहित्य लेखन को परकाया प्रवेश से भी दुरूह बताते हुए कहा कि लेखक को अपने बचपन काल में लौटकर बीते हुए युग को दोबारा जीना पड़ता है, जो किसी टाइम मशीन से गुजरने से कम नहीं है। क्षेत्रीय विधायक मंगलाराम गोदारा ने कहा कि बच्चे देश का भविष्य हैं। बच्चों के लिये सोचना हमारा प्रथम कर्तव्य है। विशिष्ट अतिथि डॉ. मेघराज शर्मा ने बदलते हुए माहौल के साथ बच्चों को सजग रखने की आवश्यकता जताते हुए कहा कि राजस्थानी बाल साहित्य में विज्ञान, कृषि, भूगोल जैसे विषयों पर सामग्री उपलब्ध करवाना आज की आवश्यकता है। विषय प्रवर्तन करते हुए भवानी शंकर व्यास ने कहा कि बाल साहित्य लेखन जटिल कार्य है। दुनिया के नामी गिरामी लेखकों ने बाल साहित्य पर लिखा है। इस मौके पर साहित्यकार श्रीभगवान सैनी की बाल काव्य कृति **म्है ई रेत रमूंला,** हनुमानगढ़ से प्रकाशित बाल साहित्य पर केन्द्रित पत्र टाबर टोली व शिवराज भारतीय के कविता पोस्टर **मां** के पंजाबी अनुवाद का भी लोकार्पण किया गया। दो दिवसीय सम्मेलन के प्रथम दिन की अध्यक्षता भंवरसिंह सामौर ने की। सम्मेलन के अंत में संयुक्त मंत्री रवि पुरोहित ने इस वर्ष की कार्ययोजना बताई। अध्यक्ष श्याम महर्षि ने आभार प्रकट किया।

पं. ताऊ शेखावटी रचित श्री खाटू श्याम चरित को सेठ मानमल कंदोई साहित्य सम्मान

कटक (उड़ीसा)। यहां के चावलिया गंज स्थित सभागृह में कविवर पं. ताऊ शेखावटी द्वारा अवधि भाषा में रचित उनकी बहुचर्चित कृति **श्री खाटू श्याम चरित** के संगीतमय पाठ का शुभारम्भ करते हुए पं. ताऊ शेखावटी ने उपस्थित भक्त श्रोताओं को श्याम प्रभु के इस चरित के बाबत विस्तार पूर्वक जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि स्वयं भगवान शिव के मुखारबिन्द से मातेश्वरी भवानी के सन्मुख गाई-गूंथी यह कथा साक्षात् संजीवनी बूटी के सदृश्य सकल पापों का विनाश करने वाली, सर्व मंगल दायिनी कथा है। इस अवसर पर राजस्थान के सवाई माधोपुर शहर से अपनी मंडली के साथ पधारे संगीताचार्य सीताराम राव के निर्देशन में कुमारी जया राव द्वारा प्रस्तुत श्याम भजनों को भी श्रोताओं ने खूब सराहा। पं. ताऊ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व उपाध्यक्ष श्री गणेश प्रसाद कंदोई ने ***स्व. सेठ मानमल कंदोई साहित्य सम्मान*** प्रदान किया।

वैवाहिक आचार संहिता

- मिलनी सबकी ४ रुपया।
- अधिकतम २५ व्यंजन का नियम लागू हो।
- विवाह मे दोनों पक्ष को मिलाकर यथासंभव सीमित उपस्थिति हो।
- कम खर्च वाले साधारण निमंत्रण पत्र छपने चाहिए।
- नेग का कार्यक्रम एक ही होना चाहिए।
- सगाई/विवाह की मिठाई का खर्च वर पक्ष ही वहन करें।
- बैण्ड, सड़क पर नाच, वैवाहिक समारोहों में शराभ का उपयोग वर्जित हो।
- रात्रि के विवाह की वनिस्पत दिन के विवाह को प्राथमिकता दी जाए।

सम्मेलन धार्मिक व अन्य सामाजिक समारोहों में भी सादगी बरतने की अपील करता है

अखिल भारतीय समिति की 20 फरवरी 2011 को कोलकाता में हुई बैठक में सर्वसम्मति से लिया गया निर्णय

राजस्थानी नै बचाओ

.- मनोहरलाल गोयल

बरस मैं अेक बार फरवरी महीना में मातृभाषा दिवस पूरै विश्व मैं मनायो जावै है। विश्व मातृभाषा दिवस मनावण री जरूरत ई कारण पड़ी कै विश्व री केई मातृभासावां धीरे-धीरे लुप्त होती जायरी है। वो दिन भी आवै कै विश्व री सारी मातृभासावां ई समाप्त हो जावै। इण आयोजन रो उद्देश्य है कि विश्व समुदाय रौ अपणी-अपणी मातृभाषा सूं लगाव बण्यो रैवै। जका लोग अपणी मातृभाषा सूं विमुख हो रैया है अथवा हो चुक्या है वणां नै मातृभाषा रो महत्व बतायो जावै अर औ संदेश दियो जावै कै भासा अर संस्कृति किणी बी समुदाय, समाज या कौम री जीवन शक्ति है। बीं री सही पैचाण है। जकौ समुदाय, समाज या कौम अपणी भासा अर संस्कृति सूं कट जावै है बींरी पैचाण धीरै-धीरै समाप्त हो जावै है।

आ मेरा या मेरा जिस्या मातृभाषा प्रेमी किणी और री कल्पना कोनी, सौ प्रतिशत सच्चाई है। अेक विश्वस्तरीय संस्था की रिपोर्ट में औ तथ्य सामानै आयौ है। इण में बतायौ गयौ है कै वर्तमान में विश्वभर में बोली जावण वाळी जीवित भासावां री कुल संख्या 6912 है। इण भासावां में सूं बी बहुतेरी अब लुप्त प्राय है अर इण मरणासन्न भासावां री संख्या लगभग 516 है। आपणै देस भारत में वर्तमान में लगभग 1652 भासा प्रचलित बतायी जावै है। पण जिण रफ्तार सूं भासावां लुप्त होती जाय रैयी है, इण मै सूं घणकरी लुप्त होवण री स्थिति में है। भारत में जितणी भासा प्रचलन में है बीं में सूं अधिकांश भासावां आदिवासी है अर इण माथै खतरौ मंडरातौ रैवै है। यूनीसेफ की ईं रिपोर्ट में बतायो गयौ है कै सन 2100 तक विश्व री लगभग 6000 भासावां अपणौ अस्तित्व खो चुकैली।

भासा विशेषज्ञ अर चिन्तक आ बात स्वीकर करै है कै किणी भासा रै समाप्त घेवण रौ अर्थ हैं, बीं भासा-भासी समुदाय की पैचाण समाप्त होणूं। यानी बीं कौम री सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक जागरूकता, रीत-रिवाज अपणी निजि विशिष्टता, कर्मकांड, अस्तित्व और अस्मिता रो समाप्त होणूं। अर जब अै सारी पैचाण समाप्त हो जावैली तो आ मानवीय मृत्यु रै समान है। आपरी मातृभासा रै प्रति आपकी बेपरवायी आपरी भासा नै लुप्त कर सकै है अर आपकी पैचाण मिटा सकै है।

सवाल कर्यो जा सकै है कै मातृभासा किण नै मानां या कैवां तो म्हारो जबाब है कै मातृभासा वा भासा है जिणनै टाबरिया अपनी मायड़ री गोदी में सीखै। मायड़ रै प्यार-दुलार रै साथ-साथ पारिवारिक संस्कार अर भासा री चासणी बी मिल्योड़ी रैवै है। बोलणै अर उच्चारण करणै री शक्ति मिलै है। परिवार रा सदस्य जे घर में बाप-दादां री भासा में बोलै-बतळावै, तो औ मातृभासा नै जीवन्त राखणै रो अपणौ दायित्व ई निभावै है। म्हारी कविता री पंक्तियां मायड़ भासा री सही व्याख्या करै-

मायड़ भासा वा भासा है, जो घर में बोली जावै है।
मायड़ री गोदी में टाबर, जिण भासा में तुतलावै है।
धरती री सौंधी महक लियां, जो घूंटी सी पच जावै है।
मां ममता सूं दुलरावै, जीं भासा में प्यार लुटावै है।

इतरौ ई कोनी, कवि नै बी आशंका है कै मातृभासा री उपेक्षा अर अवहेलना सूं आपां अपणूं अस्तित्व कोनी बचा सकांला। कवि चेतावनी रै रूप में कैवै है-

मायड़ भासा नै भूल कयां, मायड़ रो करज चुकावांला ?
अपणी भासा रै बिना कयां, अपणौ अस्तित्व बचावांला ?

मतलब साफ है कै मातृभासा री उपेक्षा सूं आपरी अपणी भासा रै अस्तित्व माथै खतरौ मंडरा रैयो है। वर्तमान में घणकरा टाबरियां नैं मां की गोद अर मां को प्यार कोनी मिलै, तो संस्कार अर भासा कठै सूं मिलसी? बड़ा घरां री बात छोड़ ई देवां। पण वर्तमान में तो साधारण मध्यम वर्ग रै परिवारां में बी लुगायां अपणा छोटा टाबरां नै दाइयां अर नोकराणियां नै सूंप कर खुद किट्टी पार्टी, क्लब अर तथाकथित समाज सेवा रै कामां माय बेसी रुचि राखै है। उणां नै इण कामां सू फुरसत ई कोनी मिलै। ई हालत में टाबरां नै नीं तो मां को भरपूर प्यार मिलै अर नीं वै मातृभासा रै सम्पर्क में ई आबै। बात अठै तक ई खत्म कोनी हो जावै। केई मायतां तो मातृभासा में बात-व्यवहार करणै में अपणी हीनता मानै है। केई माता-पिता आ चावै है कै उणां रो टाबर पैदा होतां ईं अंग्रेजी बोलै लागै। घणकरा मां बाप री आ इच्छा रैवै है कै उणां रो टाबर जल्दी सूं जल्दी अंग्रेजी बोलणूं सीख ले, जैयां किणी अंग्रेज रो टाबर हुवै। इण स्थिति मैं मातृभासा पर संकट है अर औ संकट मातृभासा नै विलुप्त होणै री स्थिति में पूगा सकै है।

अब आपां बात करां राजस्थानी भासा री। वर्तमान स्थिति में औ चिन्तन जरूरी है कै राजस्थानी भासा अबार कठै है अर भविष्य में कठै पूग सकै है। राजस्थानी भासियां री संख्या राजस्थान सहित देस अर परदेस में मिला'र दस करोड़ सूं बेसी होणी चायै। ऊपर वर्णित आठ भासावां रा बोलणियां री संख्या 240 करोड़ बताई जावै है। यानी राजस्थानी भासा समृद्ध है अर इण में नुवो-पुराणौ प्रचुर साहित्य उपलब्ध है। अबार बी मोकळो साहित्य सृजित हो रैयो है। पत्र-पत्रिकावां राजस्थानी में छप रैयी है। पण आश्चर्य ईं बात रौ है कै राजस्थानी भासा नै संवैधानिक मान्यता कोनी दी जायरी। सरकारी उपेक्षा री शिकार है- राजस्थानी।

राजस्थानी रा लोकप्रिय जनकवि कन्हैयालाल सेठिया बी आई बात कैयी है कै सिर रै बिना घड़ री पिचाण कोनी हुवै। बैयां ई राजस्थानी भासा नै विसरायां राजस्थान री पिचाण बी कोणी हो सकै। अर्ज आ ई है के अपणी मायड़ भासा राजस्थानी नै पोषण देवौ, बीं नै गळै सूं लगावौ, अपणौ कंठहार बणाओ। जै राजस्थानी।

कविता

मिलकर नया समाज बनायें

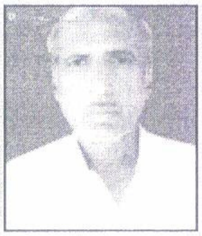

–युगल किशोर चौधरी
चनपटिया, प. चम्पारण, बिहार

सम्मेलन-ध्वज ले हाथों में,
मिलकर आगे बढ़ते जायें।
गढ़ें संगठन, बढ़ें सुपथ पर,
मिलकर नया समाज बनायें।।

छोड़ें हम पाखंड, दिखावा,
समता-ममता-घर छलकायें।
बध कर दें दहेज-दानव का,
कन्याओं को गले लगायें।।
शिक्षा का प्रकाश फैलाकर,
नूतन जीवन-ज्योति जगायें।

सादा और सरल हो जीवन,
क्षमा, त्याग, करुणा अपनायें।
त्यागें धन-मद और बुराई,
अहंकार को दूर भगायें।।
बंधु भावना को फैलाकर,
नये स्वरों में हम सब गायें।

प्रगति राष्ट्र की लक्ष्य हमारा,
मिलकर भारत सबल बनायें।
धन-अर्जन हो साधन केवल,
भाव एकता के फैलायें।।
शिव-संकल्प सदा हो मन में,
सत्य आचरण को अपनायें।

फूलों से हम रहें महकते,
नव सुगंध चहुँदिशि फैलायें।
शोषण, अत्याचार मिटाकर,
नव युग का संदेश सुनायें।।
वसुधा हो परिवार हमारा,
हँसकर सबको गले लगायें।
सम्मेलन-ध्वज ले हाथों में,
मिलकर आगे बढ़ते जायें।

गजल

बेरंग-सा लगने लगा अब आस्माँ यारो

–डॉ. दीप बिलासपुरी
बिलासपुर, जिला यमुनानगर, हरियाणा

बना था जो कभी जिनके मतों से हुक्मराँ थारो।
वही गिरवा रहा है उन गरीबों के मकाँ यारो।।

महब्बत हर किसी को दे रहा है यूँ दिले-ख़स्ता।
करे इक सी महक सब को अता जूं[1] गुलिस्ताँ यारो।।

बजाए स्वर्ग कर लूंगा गवारा नर्क में जाना।
दिखे दैरो-हरम[2] मर के अगर मुझको वहाँ यारो।।

परेशाँ कर दिया रंजो-अलम को[3] इस क़दर मैंने।
परेशाँ अब नहीं करता मुझे दर्दे-निहाँ यारो।।

हमारा भी वही है और उनका भी वही चन्दा।
जो चमके है मेरे घर में वही चमके वहाँ यारो।।

मिला वो जब गले मुझसे हुआ मैं शर्म से पानी।
बाकी थी तर्के-मै[4] जिसने गिरा कर प्यालियाँ यारो।।

सवेरे वो लगा करने जमअ फैली हुई दारू।
करी थी तर्के-मै[5] जिसने गिरा कर प्यालियाँ यारो।।

छिपे हैं गौहरे-फ़नै[6] मुख़्लतिफ़े[7] आगोश[8] में इसकी।
समन्दर से नहीं कुछ कम मेरा हिन्दोस्ताँ यारो।।

कि जिसकी जुस्तजू में मुद्दतों भटकीं मेरी आँखें।
मिला तो फिर बुला पाई नहीं उसको ज़बाँ यारो।।

नहीं भाता मुझे परदेस का ये अटपटा खाना।
बहुत याद आ रही है वो वतन की रोटियाँ यारो।।

नहीं दिखता पतंगों से भरा अम्बर कहीं मुझको।
बड़ा बेरंग-सा लगने लगा अब आसमाँ यारो।।

---

(1) जैसे (2) मन्दिर और मस्जिद (3) दु:ख-दर्द को (4) क्रोध में (5) मदिरा-त्याग (6) कलाओं के मोती (7) भिन्न-भिन्न (8) गोद।

IISD

SREI Foundation

A Gateway to Careers

"Educate Morally & Technically"
— Swami Vivekananda

Scholarship upto 100%

Quality education, Affordable Fees
— a corporate social responsibility

3 Yrs. BBA ₹ 75,000

3 Yrs. BCA ₹ 75,000

2 Yrs. MBA + PGPM ₹ 85,000

Complimentary Courses

- Company Secretaryship
- Foreign Languages
- Business English Certificate from British Council
- ERP Training (Microsoft Certified)
- Administrative Services

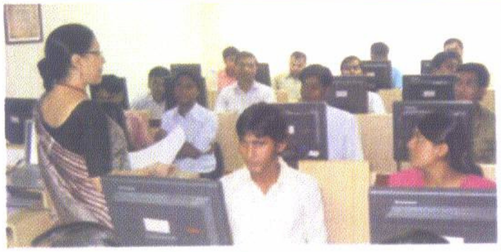

Achieve your Aspiration ...
... be a **Corporate Leader!**

Master of Business Administration (MBA)
- 2 Year Post-Graduate Course

Bachelor of Business Administration (BBA)
- 3 Year Graduate Course

Bachelor of Computer Application (BCA)
- 3 Year Graduate Course

ELIGIBILITY & SELECTION

FOR MBA
- BACHELOR'S DEGREE IN ANY DISCIPLINE
- APPEARING FOR FINAL DEGREE EXAMINATION
- GROUP DISCUSSION
- PERSONAL INTERVIEW
- ★ APPLICANTS WITH CAT / MAT / XAT ARE PREFERRED

FOR BBA & BCA
- 10 + 2 PASSED FROM ANY HIGHER SECONDARY BOARD/COUNCIL

Assistance for placement

Eminent Faculty
Regular / Weekend Classes
AC Classrooms/Hostel

Degree approved by UGC–AICTE–DEC, Ministry of HRD, Govt. of India

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in • Website : www.iisdedu.in

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28, March 2011
RNI Regd. No. 2868/68

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com

T/WB/LM-007
SRI KAILASHPATI TODI (L.M.)
JOINT GENERAL SECRETARY, A.I.M.F
16, KISHANLAL BURMAN ROAD
BANDHAGHAT, SALKIA
HOWRAH- 711106
WEST BENGAL